शाश्वत ऊर्जा

इरेडा

IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा

(नवरत्न सीपीएसई)

अक्षय क्रांति

(ई–पत्रिका)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

“मन की भाषा, प्रेम की भाषा
हिंदी है भारत जन की भाषा”

“हिंदी को अपनाओ,
देश को बढ़ाओ!”

“हिंदी हमारी शान है,”
देश का अभिमान है..

“हिंदी हमारे जीवन की
श्रेष्ठ भाषा है!”

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मार्गदर्शक

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक (वित्त)

परामर्शदाता

श्रीमती माला घोष चौधुरी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

श्री आलर कुल्लू, उप प्रबंधक (राजभाषा)

सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

(इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखों के हैं सरकार अथवा इरेडा का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।)

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा

(नवरत्न सीपीएसई)

प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

स्वतंत्रता दिवस, 2025 (15 अगस्त) और हिंदी दिवस, 2025 (14 सितंबर) की आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने निर्णय लिया कि हिंदी केंद्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी, इसलिए हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

इरेडा की हिंदी 'ई-पत्रिका–अक्षय क्रांति' के इस नवीनतम अंक के साथ आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

इरेडा भारत देश की एक सबसे बड़ी विशुद्ध ग्रीन फाइनेंसिंग कंपनी है जोकि अक्षय ऊर्जा के लिए जिम्मेदार है,

जिसका आदर्श वाक्य "शाश्वत ऊर्जा" तथा" एकबार इरेडा सदैव इरेडा" है । यह अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में जैसे पन बिजली, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास, सह-उत्पादन, ई-मोबिलिटी, ऊर्जा दक्षता और ऊर्जा संरक्षण, हरित हाइड्रोजन आदि से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं को बढ़ावा देने और संस्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में विशेषज्ञता प्रदान करती है। साथ ही, इरेडा अपने कार्यालयी कार्यों में भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए सदैव प्रयासरत है और गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील है।

तीव्रता से सतता की ओर बढ़ते विश्व में, इरेडा अग्रणी भूमिका निभा रही है**,** परिवर्तन को गति एवं दिशा प्रदान कर रही है और हरित वित्तपोषण के भविष्य को नया आकार दे रही है । इसी प्रकार मुझे पूरा विश्वास है कि राजभाषा हिंदी 'ई-पत्रिका अक्षय क्रांति' के माध्यम से भी राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार और राजभाषा हिंदी का चहुंमुखी विकास होगा ।

पुनः हिंदी दिवस, 2025 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

जय हिंद !

जय हिंदी !

****

डॉ. बिजय कुमार महान्ती

निदेशक(वित्त), इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

14 सितंबर, 2025 की आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

इरेडा की ' हिंदी ई-पत्रिका–अक्षय क्रांति के इस नवीनतम अंक के साथ आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है ।

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड (इरेडा) नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन भारत सरकार का एक 'नवरत्न' प्रतिष्ठान है । वर्ष 1987 में स्थापित इरेडा एक गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान के रूप में एक सार्वजनिक लिमिटेड सरकारी कंपनी है, जोकि ऊर्जा के नवीन और नवीकरणीय स्रोतों से संबंधित परियोजनाओं की स्थापना के लिए और ऊर्जा दक्षता / ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने, विकसित करने और वित्तीय सहायता प्रदान करने में लगी हुई है जिसकी आदर्शोक्ति "शाश्वत ऊर्जा" है।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी इरेडा में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है और 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जा रहा है । हिंदी पखवाड़े के दौरान इरेडा कर्मियों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही है जिसमें अधिक से अधिक इरेडा कर्मियों की भागीदारी अपेक्षित है। साथ ही, इरेडा में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए बेहतर महौल सृजन करने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जा रही है जिससे अधिक से अधिक इरेडा कर्मियों को प्रशिक्षित किया जा सके और इरेडा में राजभाषा हिंदी के प्रति और अधिक ज़िम्मेदार बनाया जा सके । गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इरेडा सदैव प्रयत्नशील है ।

मुझे आशा ही नहीं, किंतु पूर्ण विश्वास है कि हिंदी 'ई-पत्रिका अक्षय क्रांति' राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास में एक मील का पत्थर साबित होगी ।

पुनः आप सभी को हिंदी दिवस, 2025 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

जय हिंदी !

जय भारत !

****

माला घोष चौधुरी
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संदेश

यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि इरेडा की ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' के अगले अंक को जारी किया जा रहा है ।

ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' एक ऐसा मंच प्रदान करती है जिससे हिंदी का विकास एवं प्रचार-प्रसार होता है । ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' में दिल्ली स्थित नराकास (उपक्रम-I) के सदस्यों उपक्रमों से प्राप्त लेखों को शामिल किया जाता है और सांस्कृतिक पारंपरिक रचनाओं का समावेश करके पत्रिका को अत्यधिक आर्कषक बनाया जाता रहा है । इसमें अद्यतन तकनीकी लेखों, विभिन्न कविताओं, कहानियों, संस्मरणों इत्यादि का समावेश होता है ।

ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' में रचनाओं के अलावा राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी भी हाती है । राजभाषा हिंदी को निरंतर विकसित एवं समृद्ध करना हम सभी का कर्त्तव्य है । हमारा कर्त्तव्य यह भी है कि हम संविधान के प्रावधानों और राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन तत्परता के साथ करें ।

ई-पत्रिका 'अक्षय क्रांति' अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों और इसके संपादक मंडल को मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई देती हूँ ।

शुभकामनाओं सहित ।

****

इरेडा में राजभाषा के विभिन्न कार्यक्रमों 2024-25 के छायाचित्र

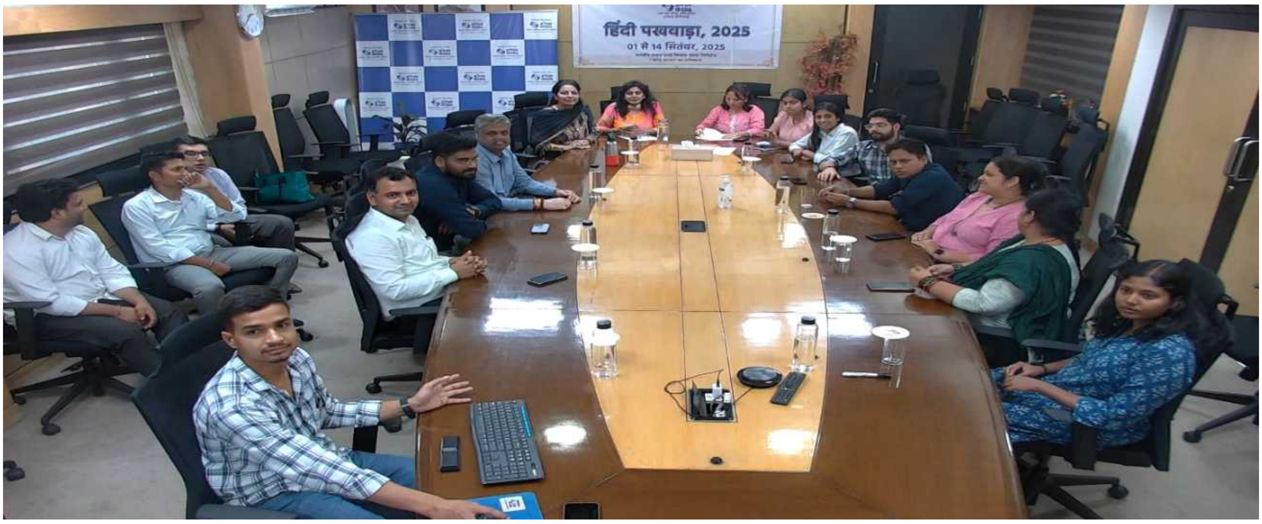
हिंदी पखवाड़ा, 2025
01 से 14 सितंबर, 2025

हिंदी पखवाड़ा, 2025
01 से 14 सितंबर, 2025

हिंदी पखवाड़ा, 2025
Tulsi

हिंदी पखवाड़ा, 2025
Tulsi

हिंदी पखवाड़ा, 2025

हिंदी पखवाड़ा, 2025

हिंदी पखवाड़ा, 2025
Tulsi

AKB BoardRoom

सामान्य व्यवहार के वाक्यांश / Phrases Commonly used

A-D	
Above mentioned	उपर्युक्त / उपरोक्त
As the case may be	यथास्थिति / यथा प्रसंग / जैसी बात हो
A draft reply is put up for approval	उत्तर का मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है
Accepted and passed for payment	स्वीकृत और भुगतान के लिए पास किया गया
Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की जाए
Advance for purchase of stationery may be sanctioned	लेखन सामग्री की खरीद के लिए पेशगी मंजूर की जाए
After taking into consideration	सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद
As a special case	विशेष मामले के रूप में
As decided	जैसा कि निर्णय लिया गया है
As desired by you	जैसा कि आपने कहा है
As discussed	विचार-विमर्श के अनुसार
As early as possible	जितनी जल्दी हो सके/यथाशीघ्र
As ordered	आदेशानुसार
As per instructions/As per rule	हिदायत के अनुसार/ नियमानुसार
As recommended	सिफारिश/संस्तुति के अनुसार
As regards / In respect of	के विषय में/के संबंध में/के बारे में
Attached herewith	इसी के साथ संलग्न
Bill outstanding	बकाया बिल
Bring this to the notice of all	इस पर सभी का ध्यान दिलाया जाए
Call for explanation	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Case under consideration	विचाराधीन मामला
Contract may be terminated	संविदा / ठेका समाप्त कर दिया जाए
Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
Draft for approval	मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत

E-I	
Ex-gratia payment	अनुग्रह रूप से भुगतान
For and on behalf of	के लिए और उनकी ओर से
For favourable reply/action	अनुकूल उत्तर/कार्रवाई के लिए
For immediate action	कृपया तत्काल कार्रवाई करें
For information	सूचना के लिए
For reconsideration	पुनर्विचार के लिए
For remarks	अभ्युक्ति के लिए
For signature please	हस्ताक्षर के लिए
For verification	सत्यापन के लिए
Further orders will follow	आगे और आदेश भेजे जायेंगे
Give top priority to this work	इस काम को परम अग्रता दें
Has been dealt suitably	समुचित कार्रवाई की गई है
I wish to inform you that	मैं आपको बताना चाहता हूं कि
In confirmation	की पुष्टि में
In connection with	के संबंध में
In due course	यथा समय-समय में
In full and final payment	कुल और अंतिम भुगतान
In lieu of	के बदलें में/के स्थान में (पर)
In reply to	के उत्तर में
Irrespective of	का लिहाज किए बिना / का विचार किए बिना
Is in the process of finalisation	अन्तिम रूप दिया जा रहा है
Is not covered by rules	नियमों में इसके लिए व्यवस्था नहीं है
Is self-explanatory	स्वत: स्पष्ट है
Issue warning	चेतावनी दे दी जाए

Due under the rules	नियमों के अधीन देय	It is in order and sanction may be accorded	यह नियम संगत है, मंजूरी दे दी जाए
J-P		**Q-Z**	
Leave asked for may be sanctioned	मांगी गई छुट्टी मंजूर की जाए	Recommended for favourable consideration	अनुकूल विचार के लिए सिफारिश की जाती है
Liable to disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है	Recovery from pay	वेतन से वसूली
Look into the matter	मामले को देखें	Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए
Madam / Sir	महोदया / महोदय	Report for duty	काम पर हाज़िर हो
Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है	Seen, thanks	देख लिया, धन्यवाद
May be debited	के नामे डाला जाए	Should be given top priority	परम अग्रता दी जाए
May be deferred	आस्थगित (मुल्तवी) रखा जाए	Subject to the approval of	द्वारा अनुमोदित होने पर
May be forwarded	को भेज दिया जाए	Submitted for consideration of	विचारार्थ प्रस्तुत
May be taken into account	का ध्यान रखा जाए	Suitable reply may be given	समुचित उत्तर भेजा जाए
May be treated as closed	समाप्त समझा जाए	This should be approved by Competent Authority	इसका अनुमोदन समक्ष प्राधिकारी द्वारा होना चाहिए
No action is necessary	कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है	Through proper channel	उचित माध्यम से
No funds are available	रकम उपलब्ध नहीं है	Under process	कार्रवाई की जा रही है
Not satisfactory	संतोषजनक नहीं है	Until further orders	अगले आदेश मिलने तक
Not yet received	अभी तक नहीं मिला / मिली	Urgently required	शीघ्र आवश्यकता है/शीघ्र चाहिए
On an ad-hoc basis	तदर्थ आधार पर	Verified and found correct	जांच कर ली गई है, सही है
On receipt of	के मिलने पर/के प्राप्त होने पर	What is the position	क्या स्थिति है
On the ground of seniority	वरिष्ठता के आधार पर	Will be dealt with severely	कड़ी कार्रवाई की जाएगी
Please acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें	With regards	सादर
Please advice	कृपया सलाह दें	Yours faithfully/sincerely	भवदीय/आपका
Please check up	कृपया जाँच करें		

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख/कविता रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	इन्द्रधनुष	कविता	सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा	2-3
2.	भारत की ग्रीन हाइड्रोजन क्रांति: एक सतत भविष्य की शुरुआत	लेख	श्री ललित सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रोजेक्ट), इरेडा	4-6
3.	कर लाभ का हरित मार्ग : इरेडा के 54 ईसी बॉण्ड	लेख	श्री पीयूष अग्रवाल, प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	7-8
4.	जिह्वा का कमाल जिह्वा का धमाल	लेख	सुश्री गुंजन महानी, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	9-10
5.	विज्ञान एक वरदान है साथ ही एक अभिशाप भी	लेख	श्री आलर कुल्लू, उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा	11-12
6.	हमारे जीवन में खेलों की भूमिका	लेख	श्री रिजवान अथर, उप प्रबंधक (प्रोजेक्ट), इरेडा	13-16
7.	एआई ने दुनिया को कैसे बदला है	लेख	सुश्री अनुष्का कुमारी, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	17
8.	गोइंग कंसर्न (चलित व्यवसाय)	लेख	श्री गौरव वार्ष्णेय, उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा	18-19
9.	हमारा संविधान	लेख	श्री हजारी लाल, प्रोटोकॉल अधिकारी, इरेडा	20-21
10.	वैश्विक संघर्ष एवं भविष्य के लिए सुझाव	लेख	श्री शुभम सिंह, कार्यपालक प्रशिक्षु, इरेडा	22-23
11.	हिन्दी का सम्मान	कविता	श्री राहुल राज, कार्यपालक प्रशिक्षु, प्रोजेक्ट, इरेडा	24
12.	"सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति – एक आध्यात्मिक यात्रा"	लेख	सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी), इरेडा	25-26
13.	स्वास्थ्य की संजीवनी हंसी	लेख	श्री प्रवीण कुमार झा, सहायक महाप्रबंधक(भर्ती), भारत संचार निगम लिमिटेड	27-29
14.	माँ का अनमोल प्यार: एक बचपन की घटना	लेख	श्री राजेश मिश्रा, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, इरकॉन	30
15.	उदास मत होना जीवन से	कविता	सुश्री कुसुम मिड्डा, प्रबंधक/ राजभाषा, इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड	31
16.	राजभाषा का विकास: सरकारी कामकाज के संदर्भ में	लेख	श्री सत्येन्द्र कुमार दूबे, अनुवाद अधिकारी, इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड	32-34
17.	कविता मेरी पहचान है	कविता	सोनम सक्सेना, हिंदी सहायक, इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड	35

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

इन्द्रधनुष

सिर्फ काला और सफ़ेद, ये ही वो दो रंग थे
जो तेरे पास सृष्टि बनाने के आधार थे
काला वो जो कालिमा लिये है, जिसे कहते है
दुख निराशा, मृत्यु अपयश और वो
सबकुछ जो नकरात्मक है
मगर सफेद है वो रंग जिसे जुड़ा है
जीवन, आशा, सुख और कीर्ति
वो सब कुछ जो सकारात्मक है
पर इन रंगो से तुझे चैन ना मिला
तू सोचने लगा अगर सृष्टि बनानी है
तो बनानी है संसर्ग और प्रेम के लिए
तो इस संसार के विस्तार और प्रसार के लिए
मुझे और रंग बनाने होंगे
ऐसे रंग जो अपनी एक अलग परिभाषा लिए हो
जो प्रेम और सिर्फ प्रेम के अनेक रूप लिए हो
बस, बना डाला तूने इन्द्रधनुष
जो बरसात के बाद सूरज और
पृथ्वी के अनुपम प्रेम को रंग देता है
सतरंगी रंगो से
और उन्हीं सतरंगी इन्द्रधनुषी रंगों में
हम हर पल, हर क्षण, डूबते, गहराते, इतराते रहते हैं
और खुशियों भरे संसार में
हर रंग को अलग-अलग तरह से

महसूस करके जीते रहते हैं
रंग तो रंग है, मगर कभी पक्के
कभी फीक़े तो कुछ कभी
दाग बनकर उभर आते है
कुछ आँखों में नीले बादलों से छाऐ रहते
तो कुछ गालों पर गुलाबी रंग बनकर सिमर/छलक जाते है
याद रहते है अक्सर
जो खुदी पर इस तरह छा जाते है
कि खुद में घुलकर खुद के होने
का एहसास देते-देते
खुद का एक रंग बन जाते है
बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल
इन्द्रधनुष के ये सात रंग
ही जोड़ते है हमारे मनो को
हमारे मन को जोड़ने वाले इन रंगों
की सतरंगी दुनिया में
आओ हम सब यू धुल मिल जाएं
कि तेरा ये रंगो भरा संसार
जैसा तूने चाहा है, बनाऐ
और कहे, इस सतरंगी दुनिया के ओ चितेरे
हम भी तो है तेरी दुनिया के
सतरंगी चितेरे ।

****

ललित सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना), इरेडा

भारत की ग्रीन हाइड्रोजन क्रांति: एक सतत भविष्य की शुरुआत

भारत के व्यस्त ऊर्जा परिदृश्य के बीच में, एक शांत क्रांति हो रही है। यह क्रांति जीवाश्म ईंधनों के बजाय ग्रीन हाइड्रोजन की संभावनाओं से प्रेरित है। भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है और सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था वाला राष्ट्र भी है। इसे एक अभूतपूर्व चुनौती का सामना करना पड़ रहा है: तेजी से विकास को ईंधन कैसे प्रदान किया जाए, साथ ही कार्बन उत्सर्जन को कम करके 2070 तक नेट-जीरो लक्ष्य को कैसे हासिल किया जाए। जनवरी 2023 में शुरू हुआ National Green Hydrogen Mission (NGHM), ग्रीन हाइड्रोजन को इस परिवर्तन का एक प्रमुख हिस्सा है। यह महत्वाकांक्षी योजना केवल स्वच्छ ऊर्जा के बारे में नहीं है बल्कि यह अर्थव्यवस्था के विकास, रोजगार सृजन और वैश्विक ग्रीन अर्थव्यवस्था में नेतृत्व का एक खाका भी है।

कल्पना कीजिए एक ऐसे समय की, जब भारत के विशाल सौर क्षेत्र और पवन फार्म न केवल बिजली पैदा करेंगे, बल्कि हाइड्रोजन भी उत्पादित करेंगे—एक बहुमुखी ईंधन जो स्टील मिलों से लेकर लंबी दूरी के ट्रकों तक सब कुछ डीकार्बोनाइज कर सकता है। देश जीवाश्म ईंधनों जैसे कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस पर सालाना €83 बिलियन खर्च करता है, जो इसके ऊर्जा आपूर्ति मिश्रण का क्रमशः 45.9%, 24% और 5.1% हिस्सा बनाते हैं। दूसरी ओर, यह अपनी प्राथमिक ऊर्जा जरूरतों का 40% से अधिक आयात करता है। यह निर्भरता न केवल विदेशी मुद्रा को खाली करती है, बल्कि वायु प्रदूषण और जलवायु संवेदनशीलता को भी बढ़ाती है। इसके विपरीत, भारत दुनिया में सबसे कम लागत वाली अक्षय ऊर्जा का दावा करता है और 748 गीगावॉट (GW) की विशाल सौर क्षमता रखता है। लेकिन सौर और पवन जैसी अनियमित अक्षय ऊर्जा स्रोत ग्रिड को अस्थिर बनाते हैं, और स्टील, उर्वरक तथा रिफाइनरी जैसे कठिन-से-बदलाव वाले क्षेत्र अभी भी कार्बन-गहन प्रक्रियाओं पर निर्भर हैं।ग्रीन हाइड्रोजन यहां महत्वपूर्ण खेल बदलने वाला एक कारक बनकर उभरता है।

ग्रीन हाइड्रोजन,अक्षय बिजली का उपयोग करके इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से उत्पादित किया जाता है, और यह "ग्रे" हाइड्रोजन का भी एक स्वच्छ विकल्प है, जिसे भारत वर्तमान में रिफाइनरी और उर्वरकों के लिए 6.5 मिलियन मेट्रिक टन प्रति वर्ष (MMTPA) उत्पादित करता है। एक अनुमान के अनुसार, 2040 तक ग्रीन हाइड्रोजन की मांग 2.5 से 3.5 गुना बढ़ सकती है, जिससे ग्रीन संस्करणों पर स्विच करना आवश्यक हो जाता है।

कल्पना कीजिए: राजस्थान के एक छोटे से गांव में, जहां सौर पैनल रेगिस्तान को ढकते हैं, अतिरिक्त ऊर्जा पानी को हाइड्रोजन में तोड़ सकती है, जिसे संग्रहीत करके सूरज के न चमकने पर उर्वरक कारखानों या ट्रकों को ऊर्जा प्रदान करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह विज्ञान कथा नहीं है; यह वह दृष्टिकोण है जिसकी ओर NGHM काम कर रहा है। 2030 तक वे 5 MMTPA ग्रीन

हाइड्रोजन उत्पादित करने का लक्ष्य रखते हैं, और निर्यात के साथ यह संख्या 10 MMTPA तक दोगुनी हो सकती है।

नीतिगत आधार: व्यवसाय-अनुकूल इकोसिस्टम का निर्माण:

NGHM के केंद्र में एक मजबूत नीतिगत ढांचा है, जिसका उद्देश्य लागतों को कम करना और अपनाने को प्रोत्साहित करना है। भारत में ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन की वर्तमान लागत €4.84–6.11 प्रति किलोग्राम है, जो ऑस्ट्रेलिया से 40% अधिक है। हालांकि, यह मिशन 2030 तक इसे €1.37 प्रति किलोग्राम तक लाने का लक्ष्य रखता है—सस्ती अक्षय ऊर्जा, स्थानीय विनिर्माण और तकनीकी प्रगति के माध्यम से । Strategic Interventions for Green Hydrogen Transition कार्यक्रम €1.92 बिलियन आवंटित करता है, जिसमें €488 मिलियन इलेक्ट्रोलाइजर्स के लिए और €1.44 बिलियन उत्पादन प्रोत्साहनों के लिए हैं।

उदाहरण के लिए, अक्षय ऊर्जा का उपयोग करके हाइड्रोजन और अमोनिया बनाने वाले संयंत्रों के लिए अंतरराज्यीय ट्रांसमिशन शुल्क पर 25 वर्ष की छूट है। यह रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी भारतीय कंपनियों के लिए फायदेमंद है, जो विशाल ग्रीन हाइड्रोजन संयंत्र बनाने की योजना बना रही हैं। नियमों में बदलाव इसे और आसान बनाते हैं: अनुमोदन तेज होते हैं, कर कम होते हैं, स्पेशल इकोनॉमिक जोन्स बनाए जाते हैं, और ग्रीन संयंत्रों को पर्यावरणीय मंजूरी से छूट दी जाती है। इसके अलावा एकल-खिड़की मंजूरी प्रणाली लालफीताशाही को कम करती है, ताकि नवप्रवर्तक व्यवसाय बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर सकें, न कि सरकारी कागजात पर मांग-पक्ष के उपाय भी उतने ही नवीन हैं। मिश्रण कोटा पारंपरिक उद्योगों में ग्रीन हाइड्रोजन के उपयोग को अनिवार्य बनाएंगे, और प्रतिस्पर्धी बोली से सुनिश्चित होगा कि खरीद सबसे अच्छी कीमत पर हो। तकनीक-तटस्थ दिशानिर्देश इलेक्ट्रोलिसिस और बायोमास विधियों को प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देते हैं, और प्रमाणन प्रणाली अक्षय स्रोतों की जांच करती है, जो निर्यात की विश्वसनीयता बढ़ाती है। उदाहरण के तौर पर, भारत की प्रस्तावित Green Hydrogen Certification Scheme हाइड्रोजन के प्रति किलोग्राम 2 किलोग्राम CO_2 की सख्त जीवन-चक्र उत्सर्जन सीमा निर्धारित करती है, जो EU के 3.38 किलोग्राम बेंचमार्क से अधिक सख्त है। यह भारत की वैश्विक मानकों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ये नीतियां न केवल घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय निवेश को भी आकर्षित करती हैं। यह इकोसिस्टम नवाचार को बढ़ावा देता है, Strategic Hydrogen Innovation Partnership के माध्यम से अनुसंधान और विकास से लेकर National Skill Development Mission के माध्यम से कौशल-निर्माण तक जोर देता है।

चरणबद्ध कार्यान्वयन: पायलट से व्यावसायिक पैमाने तक :

NGHM दो चरणों में सामने आता है, जो एक स्पष्ट रोडमैप प्रदान करता है। Phase I (2022–2026) मांग सृजन और आपूर्ति बढ़ाने और चरण II (2026–2030) विस्तार पर जोर देता है।
चरण I (2022–2026): बुनियादी ढांचा और प्रयोग

- रिफाइनरी, उर्वरक और शहरी गैस परियोजनाओं में ग्रीन हाइड्रोजन
- पायलट परियोजनाएँ: स्टील, ट्रांसपोर्ट (बसें, ट्रक), समुद्री जहाज
- इलेक्ट्रोलाइज़र उत्पादन में उछाल

इसके अंतर्गत ,Indian Oil Corporation (IOC) ने फरीदाबाद और वडोदरा में हाइड्रोजन रिफ्यूलिंग स्टेशन शुरू किए हैं। मार्च 2025 में, सरकार ने टाटा मोटर्स और अशोक लीलैंड को 15 फ्यूल-सेल बसों और 22 आईसी इंजन ट्रकों के लिए €2.3 मिलियन की सहायता दी हैं।
चरण II (2026–2030): विस्तार और समता

- कीमतें जीवाश्म ईंधनों के बराबर लाना
- रेलवे, विमानन, और हाइड्रोजन हब की शुरुआत
- बंदरगाह: कांडला (गुजरात), पारादीप (ओडिशा), तूतुकुड़ी (तमिलनाडु) हब बनेंगे
- NTPC द्वारा आंध्र प्रदेश में €19.7 बिलियन का प्रोजेक्ट, जो 2027 तक 1,500 टन/दिन उत्पादन करेगा

मोबिलिटी एक और हॉटस्पॉट है। हाइड्रोजन का तेज रिफ्यूलिंग और लंबी रेंज बड़े वाहनों के लिए उपयुक्त है, जो EV की सीमाओं को हल करता है। । कल्पना कीजिए गुजरात में एक ट्रक ड्राइवर का ग्रीन स्टेशन पर मिनटों में भरना और राज्यों भर में उत्सर्जन-मुक्त माल ढोना—यह NGHM द्वारा संभव बनाया जा रहा है।

चुनौतियां और आगे का रास्ता: बाधाओं को पार करना

ग्रीन हाइड्रोजन, ग्रे हाइड्रोजन से 2-3 गुना महंगा है। अक्षय ऊर्जा की अनियमितता और इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी (भूमि, पानी, ट्रांसमिशन) बाधाएं अभी भी हैं। चीन और अमेरिका जैसे सब्सिडी वाले बाजारों से प्रतिस्पर्धा, साथ ही इलेक्ट्रोलिसिस की अक्षमताएं, चीजों को जटिल बनाती हैं। वित्तीय रूप से तनावग्रस्त DISCOMs बिजली की विश्वसनीयता को कमजोर करती हैं।

निष्कर्ष: भारत और पृथ्वी के लिए एक निर्णायक क्षण

भारत का National Green Hydrogen Mission ,ऊर्जा प्रक्षेपवक्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो जलवायु आकांक्षाओं, औद्योगिक नीति और भू-राजनीतिक रणनीति को एकीकृत करता है। मिशन की सफलता सार्वजनिक समर्थन, निजी निवेश, तकनीकी नवाचार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के प्रभावी एकीकरण पर निर्भर करेगी। भारत के पास संभावना और दायित्व है कि वह दुनिया को दिखाए कि एक बड़ा, तेजी से बढ़ता देश विकास या ऊर्जा सुरक्षा से समझौता किए बिना डीकार्बोनाइजेशन हासिल कर सकता है।

आने वाले दशक में, भारत की ग्रीन हाइड्रोजन कहानी इलेक्ट्रोलाइजर विनिर्माण कारखानों, सौर ऊर्जा फार्मों, स्टील उत्पादन संयंत्रों और समुद्री मार्गों के रूप में सामने आएगी। यदि परिस्थितियां अनुकूल रहीं, तो यह एक परिवर्तन की कहानी होगी—एक ऐसे राष्ट्र की, जिसने अपनी ऊर्जा चुनौतियों को स्वच्छ ईंधन की सफलता में बदल दिया और दूसरों के लिए रास्ता भी रोशन किया ।

****

पीयूष अग्रवाल
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

कर लाभ का हरित मार्ग : इरेडा के 54 ईसी बॉण्ड

जब कोई व्यक्ति या संस्था किसी दीर्घकालिक पूंजीगत परिसंपत्ति — जैसे ज़मीन, भवन या गैर-सूचीबद्ध शेयर — को बेचती है, तो उस पर प्राप्त लाभ को दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ (LTCG) कहा जाता है। इस लाभ पर सामान्यतः ~ 20 % कर (इंडेक्सेशन लाभ सहित) लगाया जाता है, जिससे बिक्री पर प्राप्त वास्तविक लाभ में कमी आती है। लेकिन, आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 54EC के तहत एक विशेष छूट प्रावधान उपलब्ध है, जिसके अंतर्गत यदि पूंजीगत लाभ को निर्धारित समय (छह माह) के भीतर अधिसूचित बॉन्ड में निवेश किया जाए, तो उस पर कर से छूट प्राप्त की जा सकती है। यह छूट प्रावधान उन कर दाताओं के लिए विशेष रूप से सहायक है, जिन्होंने अचल संपत्तियों या दीर्घकालिक निवेशों से पूंजीगत लाभ अर्जित किया है और वह कर देनदारी को टालना नहीं, बल्कि वैध रूप से कम करना चाहते हैं। धारा 54EC केवल उन्हीं दीर्घकालिक पूंजीगत लाभों पर लागू होती है जो भूमि या भवन जैसी अचल संपत्तियों की बिक्री से उत्पन्न होते हैं। यह छूट केवल तभी मान्य होती है जब निवेशकर्ता अधिसूचित संस्थाओं द्वारा जारी बॉन्ड में निवेश करें और वह भी अधिसूचना की तारीख के भीतर। इसका उद्देश्य दीर्घकालिक लाभ को ऐसी परियोजनाओं में लगाना है जो राष्ट्रीय अधोसंरचना और सतत विकास में योगदान देती हों, जिससे देश को सामाजिक-आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो सके।

इन विशेष बॉन्डों को 54EC बॉन्ड कहा जाता है, जो की पूर्व में सिर्फ कुछ चुनिंदा सरकारी प्रतिष्ठानों — जैसे आर ई सी (REC), पी एफ सी (PFC), हडको (HUDCO) और आई आर एफ सी (IRFC) द्वारा जारी किए जाते हैं। अब एक महत्वपूर्ण पहल में, वित्त मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सी बी डी टी) ने अपनी संस्था इरेडा द्वारा जारी किए जाने वाले बॉन्डों को भी धारा 54EC के अंतर्गत 'दीर्घकालिक निर्दिष्ट परिसंपत्ति' के रूप में अधिसूचित कर दिया है। यह अधिसूचना 09 जुलाई 2025 से प्रभावी है, और इसके तहत इस तिथि के बाद कंपनी द्वारा जारी किए गए बॉन्डों में निवेश करने पर पूंजी गत लाभ पर कर से छूट मिल सकेगी।

54EC बॉन्ड की प्रमुख विशेषताएँ	
ब्याज दर: 54EC बॉन्ड पर निश्चित दर से ब्याज दिया जाता है, जो सामान्यतः सालाना भुगतान के रूप में प्राप्त होता है। यद्यपि इस ब्याज पर कर देय होता है, फिर भी इसकी नियमित आय प्रवाह विशेष रूप से सेवानिवृत्त और स्थिर रिटर्न चाहने वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त मानी जाती है।	**लॉक-इन अवधि:** इन बॉन्डों की परिपक्वता अवधि 5 वर्ष (60 माह) होती है, जिसके दौरान इन्हें न तो बेचा जा सकता है, न ही गिरवी रखा जा सकता है। यह अनिवार्य लॉक-इन अवधि निवेश को स्थिर बनाए रखने और दीर्घकालिक परियोजनाओं की वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु लागू की जाती है।

निवेश सीमाः	**निवेश की सुरक्षाः**
एक वित्तीय वर्ष में अधिकतम ₹ 50 लाख तक का निवेश किया जा सकता है। यह सीमा धारा 54EC के अंतर्गत निर्धारित है और इसका उद्देश्य कर छूट का सीमित और लक्ष्य युक्त लाभ प्रदान करना है।	ये बॉन्ड AAA-रेटिंग प्राप्त करते हैं और उन्हें सरकार के स्वामित्व वाली प्रतिष्ठानों द्वारा जारी किया जाता है। इससे न केवल पूंजी की सुरक्षा सुनिश्चित होती है, बल्कि निवेशकों का विश्वास भी बना रहता है।

इरेडा के मामले में, इन बॉन्डों के माध्यम से जुटाई गई धनराशि को स्वतंत्र रूप से राजस्व उत्पन्न करने वाली अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं में ही निवेश किया जाएगा, जिनकी ऋण सेवा राज्य सरकारों पर निर्भर नहीं होगी। यह पहल न केवल देश की जलवायु प्रतिबद्धताओं के अनुरूप है, बल्कि निवेशकों को हरित विकास में भागीदारी का अवसर भी प्रदान करती है — साथ ही साथ कर बचत का लाभ भी।

इन बॉन्डों के माध्यम से एक ओर निवेशकों को कर में राहत मिलती है और दूसरी ओर हरित ऊर्जा जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में दीर्घकालिक पूंजी का प्रवाह सुनिश्चित होता है। इसके अतिरिक्त, ऐसे टैक्स-फ्री निवेश विकल्प उपलब्ध होने से इरेडा के लिए पूंजी जुटाने की लागत भी घटती है। यह अधिसूचना दर्शाती है कि सरकार पारंपरिक निवेश साधनों से आगे बढ़कर उन क्षेत्रों को प्राथमिकता दे रही है जो आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन को भी साधते हैं। नवीन निवेशकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिससे वे सुरक्षित और सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश का हिस्सा बन सकते हैं। इससे न केवल कर नियोजन को बल मिलेगा, बल्कि देश की ऊर्जा नीति में निजी पूंजी की भागीदारी को भी एक नई दिशा मिलेगी। इस प्रकार, यह अधिसूचना इरेडा की विश्वसनीयता व पारदर्शिता को और सुदृढ़ करती है।

संक्षेप में कहा जाए तो, इरेडा के 54EC बॉन्ड अब निवेशकों के लिए एक ऐसा विकल्प हैं जो कर बचत के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण और पर्यावरण संरक्षण में योगदान का अवसर भी प्रदान करते हैं।

****

गुंजन महानी

उप प्रबंधक(वित्त तथा लेखा), इरेडा

जिह्वा का कमाल जिह्वा का धमाल

डॉक्टर मरीज़ के मर्ज की पहचान उसकी जिह्वा से करते हैं ऐसे ही मानव की सही परख उसकी जिह्वा है। जब कि इंसान के पास कान दो हैं पर उनका काम एक ही है, आंखें दो हैं लेकिन काम देखने का ही करती हैं, नाक के दो छीद्र पर काम एक ही है।
परंतु जिह्वा सिंग्ल होते हुए भी काम दोहरा करती है, खाना और बोलना अर्थात eating food & speaking words।इसीलिये भोजन करना आ गया तो पेट संभलेगा और बोलना आ गया तो संबंध संवरेगा।

यूं तो जानवरों को भी जीभ मिली हुई है, वह भी भौंकते हैं, गर्जना करते हैं और हिनहिनाते हैं, किंतु उनकी आवाज में ध्वनि है शब्द नहीं। जबकि मनुष्य का छोटा सा बच्चा भी सुख दुख की संवेदना को वाणी द्वारा स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है। अत: पूर्ण प्रकट है समस्त प्राणि जगत में मनुष्य की जीभ अमूल्य है।

मजे की बात यह है आंख/ कान/ नाक/ हाथ और पैर से मनुष्य की पहचान नहीं होती लेकिन जीभ द्वारा किए गए/ जाने वाले भोजन और भाषन से होती है। आंख दर्द, कान दर्द, नाक दर्द, पेट दर्द, सर दर्द होता है लेकिन आज तक जीभ दर्द के बारे में नहीं सुना, क्योंकि कितना ही बोलो और कितना ही खा लो जीभ कभी नहीं थकती। ऐसी अनेक खासियतो से युक्त जीभ का प्रयोग, उपयोग एवम शक्ति प्रयोग कैसे करना है यह मनुष्य के हाथ में है।

मानव जीवन की हर क्रिया जीव की धूरी पर घूमता है, आवश्यकता की उपयोग पूर्ती भी बिना बताए नहीं होती और इच्छाओं का पोषण भी वाणी से होता है। प्रचार के विकास का श्रेय भी इसी जीभ को मिलता है। शैक्षणिक क्षेत्र की कोई डिग्री हो या नौकरी का अंतिम चुनाव, सब कुछ वाणी के अधीन है। और तो और डॉक्टरेट की उपाधि भी जिह्वा की मोहताज है क्योंकि बिना वईवा (viva) के डिग्री फाइनल नहीं होती।

ये कहना भी अनुचित नहीं होगा कि देश की बागडोर जिसके हाथों में है ऐसे लोकसभा और राज्यसभा के नियंत्लक भी स्पीकर कहते हैं। जिह्वा इतनी शक्तिशाली है कि इसने टेलीकॉम इंडस्ट्री को टॉप इंडस्ट्री बना दिया है। कुल मिलाकर राष्ट्रीय प्रसारण मंत्री का ख़िताब भी ये पहन ती है।

जरा सोचो! जिह्वा ना होती तो तीर्थकरो से धर्म की स्थापना कौन करवाता? श्रुतज्ञान कैसे होता? अच्छी-सच्ची बातों की प्रस्तुति कैसे होती? मार्गदर्शन, निर्देश और प्रतिपादन के बिगुल कैसे बजते? चाणक्य नीति की उद्घाटन भी जीभ ही है। भाषा का शुभारम्भ कराने वाली एवम संबंधों को सुसज्जित रखने वाली जिह्वा को बार-बार नमस्कार। राज्य का विनाश हो या प्रजा का विकास, युद्ध की भेरी हो या

प्रवचनो का उद्‌घोष सबका जिम्मा जिह्वा ही उठाती है । एक पल के लिए कल्पना करके देखो वार्तालाप या संलाप के अभाव में जीवन कितना निरस और उबाऊ है ।

जीवन को रोचक और मन को प्रसन्न बनाने वाली तथा समय कि ऊब व ऊहापोह से ऊपर उठाने वाली भी यहीं जबान है । सिर्फ वाद के क्षेत्र में ही नहीं स्वाद के क्षेत्र में भी जीभ की जड़ गहरी फैली हुई है । सुरिले स्वर के साथ रसीले चटपटे भोजन की चाहत रखता है इंसान । इसीलिये भगवान महावीर ने जबान का सम्भल सम्भल कर प्रयोग करने हेतु भाषण प्रबंधन और भोजन प्रबंधन की थीम बताई है ।

सावधान यदि जीभ के प्रति सचेत नहीं रहे वाद के दबाव में तथा स्वाद के प्रभाव में बह गए तो जीवन का पतन सुनिश्चित है । अत: याद रखना जीभ पर लगी चोट जल्दी ठीक हो जाती है किंतु जीभ से लगी चोट जल्दी ठीक नहीं होती ।

****

आलर कुल्लू
उप प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

विज्ञान एक वरदान है साथ ही एक अभिशाप भी

"आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है" इस प्रसिद्ध कहावत का अर्थ है कि जब किसी व्यक्ति को किसी चीज की बहुत अधिक आवश्यकता होती है, तो वह उस आवश्यकता को पूरा करने के लिए नए-नए तरीके खोजने या आविष्कार करने के लिए प्रेरित होता है । मानव जाति की इस धरती पर सृष्टि की गाथा भी अद्‌भुत है । मानव आज इसी आवश्यकता को पूरी करने के लिए पाषाण युग से विकास करते करते आधुनिक युग, विज्ञान युग और कंप्यूटर युग में पहुँच चुका है ।

आदिम मानव शुरुआत में, मानव शिकारी और संग्राहक था, जो भोजन और आश्रय की तलाश में घूमता रहता था। इसके बाद कृषि की क्रांति हुई और कृषि की शुरुआत ने मानव जीवन को बदल दिया। कृषि के विकास ने बस्तियों और शहरों के उदय को जन्म दिया, जिससे सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं का विकास हुआ।

विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं जैसे मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख शहर थे, जो लगभग 2500 ईसा पूर्व स्थापित हुए थे। ये शहर अपने उन्नत शहरी नियोजन, पक्की ईंटों के घरों के लिए प्रसिद्ध थे ।मेसोपोटामिया, मिस्र, ग्रीस, और रोम ने कला, विज्ञान, और कानून के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया, पुनर्जागरण ने कला, साहित्य, और विज्ञान में नई चेतना का संचार किया। 18वीं शताब्दी में ज्ञानोदय ने तर्क और विज्ञान पर जोर दिया। 18वीं और 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति हुई और इस औद्योगिक क्रांति ने मशीनों और कारखानों का उपयोग करके उत्पादन में क्रांति ला दी ।

20वीं और 21वीं सदी आते आते मानव ने तकनीकी प्रगति, जैसे कि कंप्यूटर, इंटरनेट, और अंतरिक्ष यात्रा, ने मानव जीवन को और भी बदल दिया। ज्ञान और विज्ञान और वैज्ञानिक खोजों और तकनीकी नवाचारों ने मानव जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज मानव ज्ञान और विज्ञान, कम्प्यूटर, एआई के युग में पहुँच गया है ।

आधुनिक मानव ने हर क्षेत्र में तरक्की की है । आज मानव द्वारा अंतरिक्ष पर विजय प्राप्त करने की कोशिश की जा रही है । इसी क्रम में भारतीय राष्ट्र के मूल अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, शुभंशु शुक्ला आदि ने भी अंतरिक्ष की सैर की थीं । चंद्रमा में भी शहर बसाने की तैयारी चल रही है और गगन पर विजय का पताका लहराने का अविरल प्रयास किया जा रहा है । हर क्षेत्र में प्रगति ही प्रगति हो रही है, कोई ऐसा क्षेत्र बाकी नहीं है जो विज्ञान से अछूता रहा हो ।

हां, लेकिन एक हकीकत यह भी है विज्ञान हमारे लिए वरदान के साथ-साथ एक अभिशाप भी सिद्ध हो रहा है । विज्ञान के नए-नए अविष्कार और विकास ने मानव जीवन के लिए कई जटिल समस्याएँ, बीमारियाँ और खतरे पैदा कर रहीं है । आज हम तकनीकी और विज्ञान पर और अधिक निर्भर हो गए हैं । समय और दूरी पर विजय प्राप्त करने की कोशिश और विज्ञान पर भरोसा ने अहमदाबाद से लंदन के बीच उड़ान भरने वाली फ्लाइट एआई 171 ड्रीमलाइनर टेक-ऑफ़ के ठीक बाद सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के रनवे से सिर्फ 1.5 किलोमीटर (0.9 मील) दूर बोइंग 787-

8 ड्रीमलाइनर दुर्घटनाग्रस्त हो गया और इस त्रासदी में विमान में सवार 241 लोगों की मौत हो गई और तो यह निजी मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल में गिर गई जिसमें दोपहर के भोजन कर रहे मेडिकल छात्राएँ भी मारे गए । इस विमान में सीट नंबर 11ए में बैठे एक ही यात्री किस्मत से बच निकला ।

बांग्लादेश, ढाका सशस्त्र बलों के मीडिया प्रभाग इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आइएसपीआर) के अनुसार, एफ-7 बीजीआइ प्रशिक्षण विमान ने 21 जुलाई को स्थानीय समयानुसार दोपहर 1:06 बजे उड़ान भरी और लगभग 1.30 बजे उत्तरा के माइलस्टोन स्कूल व कालेज की इमारत से यह टकरा गया। इस हादसे में 35 लोगों की जान जा चुकी थी, जिनमें से ज्यादातर स्कूली बच्चे थे ।

युद्धों के इतिहास को देखेँ तो पहले हाथी घोड़े और पैदल सिपाहियों के बीच आमने-सामने जंग लड़े जाते थे । किन्तु विज्ञान के नए-नए आविष्कार ने तो युद्ध लड़ने का तरीका ही बदल डाला । आज के नए-नए युद्ध के हथियार मिसाइल, ब्लेस्टिक मिसाइल, जंगी जहाज, परमाणु बम आदि जैसे अत्याधुनिक हथियारों की होड़ ने एक दूसरे देश की अस्तित्व पर ही खतरा हो गया है । आज हम रूस और यूक्रेन की जंग में जान-माल की क्षति को देख रहे हैं । इज़राइल और ईरान की एक दूसरे से करीब 2000 मील दूर है, लेकिन आधुनिक अस्त्र और शस्त्र से युद्ध लड़ा जा रहा है और एक देश दूसरे देश मारने मिटाने के लिए लड़ रहा है ।

ऑपरेशन सिन्दूर भारतीय सशस्त्र सेनाओं द्वारा 6-7 मई की रात को पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) में किए गए एक सैन्य हवाई अभियान का कूटनाम (कोडनेम) था, कौन भूल सकता है । भारत ने कहा कि इसका उद्देश्य पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी ढाँचे को निशाना बनाना था ।

प्रकृति का नियम है-जन्म है तो मरण भी, दिन है तो रात भी सुख है तो दुख भी है । सूरज उगता है तो डूबता भी है । जीवन में सफलता मिलती है तो अफलता भी । इसी प्रकार विज्ञान एक वरदान है साथ ही में हमारे लिए एक अभिशाप भी है । विज्ञान को मानव जाति के सतत विकास के लिए वरदान के रूप में दोहन किया जाना चाहिए । और मानव जाति के सतत विकास के लिए अक्षय ऊर्जा को भी अपनाना चाहिए ।

****

रिजवान अथर
उप प्रबंधक (सचि.), इरेडा

हमारे जीवन में खेलों की भूमिका

खेल खेलने से हमारी मस्तिष्क गतिविधि और मांसपेशियों की शक्ति बढ़ती है। नियमित रूप से खेल खेलने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। एथलेटिक्स के माध्यम से हम अपनी दृढ़ता, इच्छाशक्ति, टीम वर्क और योजना बनाने की क्षमता विकसित करते हैं। खेल हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

खेल हर किसी के जीवन का हिस्सा होना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) यही सलाह देता है। WHO द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, अपर्याप्त रूप से सक्रिय लोगों में सक्रिय लोगों की तुलना में मृत्यु का जोखिम 20% से 30% अधिक होता है।

जब से हम कल्पना कर सकते हैं, खेल तब से मौजूद हैं और इसके पीछे एक ठोस कारण है। नियमित रूप से खेल खेलने से आपका स्वास्थ्य बेहतरीन हो सकता है। नियमित रूप से खेलने से आपको और आपके परिवार को डॉक्टर के पास जाने की ज़रूरत काफ़ी कम हो सकती है। कैसे? आइए, रोज़ाना किसी न किसी तरह का खेल खेलने के कुछ अद्भुत स्वास्थ्य लाभों पर नज़र डालें।

1. बेहतर नींद

नियमित रूप से खेलों में भाग लेने से यह सुनिश्चित होता है कि मस्तिष्क तनाव-मुक्ति के अपने कार्य अच्छी तरह से कर सके। नियमित गतिविधि से हार्मोन का उचित नियमन सुनिश्चित होता है और पूरे दिन मूड का स्तर नियंत्रित रहता है। इसलिए, प्रतिदिन पर्याप्त शारीरिक गतिविधि से अच्छी नींद सुनिश्चित होती है।

2. मज़बूत हृदय

हृदय रोगों पर गतिहीन जीवनशैली के हानिकारक प्रभावों को साबित करने के लिए पर्याप्त अनुभव जन्य प्रमाण मौजूद हैं। दैनिक खेल गतिविधियों और बेहतर हृदय स्वास्थ्य के बीच सीधा संबंध है। चूँकि खेल खेलने के लिए लंबे समय तक गहन हृदय गतिविधि की आवश्यकता होती है, यह धीरे-धीरे हृदय की कार्यक्षमता और स्वास्थ्य में सुधार करता है। यदि आपका हृदय स्वस्थ है, तो यह आपके शरीर में रक्त को प्रभावी ढंग से पंप करता है। जब आप नियमित रूप से व्यायाम करते हैं, तो आपका हृदय उच्च स्तर पर कार्य कर पाएगा। एक मज़बूत हृदय होने से शरीर के संपूर्ण स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

3. संबंध बनाना

खेल सभी पृष्ठभूमि के लोगों को एकजुट करता है, चाहे उनकी जातीयता, धर्म या राजनीतिक मान्यताएँ कुछ भी हों। खेल आपको नए लोगों से मिलवाते हैं और नए रिश्ते बनाते हैं। खेल खेलने से पेशेवर अवसर भी खुल सकते हैं।

4. बेहतर फुफ्फुसीय कार्य

खेलते समय, हृदय तेज़ी से धड़कता है और रक्तप्रवाह में अधिक ऑक्सीजन पहुँचाता है, जबकि कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य अपशिष्ट गैसें पसीने के रूप में शरीर से बाहर निकल जाती हैं। परिणामस्वरूप, फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है, हृदय स्वास्थ्य में सुधार होता है, और फेफड़ों का प्रदर्शन बेहतर होता है।

5. चिंता कम करता है

शारीरिक गतिविधि मस्तिष्क में तनाव हार्मोन के स्तर को कम करती है और रक्त प्रवाह में एंडोर्फिन के उत्पादन को बढ़ाती है। इस एड्रेनालाईन के स्राव से व्यक्ति की प्रेरणा बढ़ती है। नियमित गतिविधि चिंताओं को दूर रख सकती है और व्यक्ति के अवचेतन मन को दीर्घकालिक तनाव से मुक्त रख सकती है।

6. बेहतर मानसिक स्वास्थ्य

खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों में नियमित भागीदारी भी अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद कर सकती है। इसमें अन्य बातों के अलावा, आपकी भलाई की भावना को बढ़ाना, आपके मूड को बेहतर बनाना, चिंता को कम करना, नकारात्मक भावनाओं से लड़ना और खुद को अवसाद से बचाना शामिल है।

7. व्यक्तित्व और नेतृत्व क्षमता का निर्माण करता है

नए शोध के अनुसार, खेलों में भागीदारी बेहतर नेतृत्व क्षमता से जुड़ी है। खेल लोगों को एक 'पारिवारिक मानसिकता' विकसित करने का अवसर देते हैं, चाहे वे जीतें, हारें या साथ मिलकर अभ्यास करें। खेल भावना एक महान नेता के प्रमुख गुणों में से एक है, जिस पर हम ज़ोर देते हैं।

8. आत्मविश्वास में वृद्धि

खेलों में ज़्यादा जीत से दिमाग में सेरोटोनिन का उत्पादन बढ़ता है। विजय हार्मोन के रूप में जाना जाने वाला सेरोटोनिन समग्र आत्मविश्वास और आत्म-विश्वास को बढ़ाता है। जो लोग नियमित रूप से खेल गतिविधियों में भाग लेते हैं और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में भाग लेते हैं, उनमें आत्मविश्वास और मज़बूत व्यक्तित्व का विकास होता है।

न्यूज़ीलैंड के एक अध्ययन के अनुसार, जो बच्चे यौवन से पहले नियमित शारीरिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं, वे अपने भविष्य के विकास के लिए एक ठोस आधार तैयार करने में बेहतर सक्षम होते हैं।

खेल हमारे जीवन में बहुआयामी और अभिन्न भूमिका निभाते हैं, टीम वर्क, अनुशासन और लचीलेपन को बढ़ावा देते हैं। इनमें विभिन्न संस्कृतियों के बीच एक समान भावना को बुनने और पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना लोगों को एक साथ लाने की शक्ति होती है। अच्छे या बुरे खेल के बीच अंतर करने के बजाय, खेलों से मिलने वाले सकारात्मक सबक को स्वीकार करना अधिक महत्वपूर्ण है। एक अंक प्राप्त करने या एक अंक से अधिक अंक प्राप्त करने के अलावा, खेल आवश्यक जीवन कौशल सिखाते हैं जो चरित्र और व्यक्तिगत विकास को आकार देते हैं।

खेलों से और भी काफी सारे लाभ होते हैं जो निम्लिखित हैं :

शारीरिक स्वास्थ्य

अपनी शारीरिक क्षमताओं को उपयोग में लाने का एक आनंददायक तरीका खेलकूद है। खेलों में निरंतर भागीदारी हमेशा शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में कारगर साबित हुई है। नियमित भागीदारी स्वस्थ वजन बनाए रखने, मांसपेशियों के निर्माण और हृदय संबंधी स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करती है। शरीर को लचीलेपन की आवश्यकता होती है, और खेलकूद ऐसी ही गतिविधियों में से एक है, जो बुनियादी मानवीय शारीरिक क्षमता के साथ न्याय करती है। हालाँकि किसी भी खेल को व्यवसाय या जुनून के रूप में महत्वपूर्ण रूप से शामिल नहीं किया जाता है, फिर भी हल्की-फुल्की खेल गतिविधियों में भाग लेने से सर्वोत्तम शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

मानसिक स्वास्थ्य

मानसिक स्वास्थ्य हर इंसान के लिए ज़रूरी है। मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के कई तरीके हैं, फिर भी सबसे ज़्यादा सुझाया और प्रचलित तरीका खेल है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ, खेल मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। कई अध्ययनों और शोधों ने साबित किया है कि तनाव कम करने से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। शारीरिक गतिविधि एंडोर्फिन और मूड बढ़ाने वाले हार्मोन्स के स्राव को बढ़ावा देती है। ये हार्मोन्स तनाव और चिंता को कम करने और सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। चूँकि खेलों में रणनीतिक योजना, निर्णय लेने और त्वरित प्रतिक्रिया जैसे संज्ञानात्मक अभ्यास शामिल होते हैं, इसलिए ये मानसिक तीक्ष्णता और एकाग्रता का दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करते हैं।

सामाजिक कौशल

कई खेल स्वाभाविक रूप से टीम-उन्मुख होते हैं। किसी भी खेल में सफलता प्राप्त करने के लिए टीम को कुशल संचार और पारस्परिक कौशल की आवश्यकता होती है। बचपन से ही खेल एक मंच प्रदान करते हैं जहाँ दो से ज़्यादा लोगों के साथ प्रभावी ढंग से काम किया जा सकता है। कुशलता से काम करना सीखने से सहयोग, संचार और साझा ज़िम्मेदारी के बहुमूल्य सबक मिलते हैं। खेल व्यक्तियों को नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाने के अवसर प्रदान करते हैं। मार्गदर्शन या नेतृत्व आत्मविश्वास और टीम का मार्गदर्शन करने और नेतृत्व करने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है। टीम के साथ सामाजिकता से उत्पन्न सौहार्द, सहानुभूति और बंधन का निर्माण करता है जो खेल से परे भी फैलता है।

लक्ष्य निर्धारण और उपलब्धि

किसी भी खेल का समय स्वाभाविक रूप से एक लक्ष्य या प्राप्ति के उद्देश्य से जुड़ा होता है। प्रत्येक खेल का समय या संख्या के संदर्भ में अपना गंतव्य होता है जहाँ एक टीम विजयी होती है या बाद में उस मुकाम तक पहुँचती है। इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कड़ी तैयारी, योजना और रणनीतियों की आवश्यकता होती है। लक्ष्य निर्धारण प्रक्रिया प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने, प्रेरित रहने और प्रगति पर नज़र रखने में मदद करती है। टीम या स्वयं के लिए ऐसे लक्ष्यों को प्राप्त करना एक उपलब्धि की भावना है। यह भावना खेल के मैदान से आगे तक फैली हुई है, जिससे आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ता है। लक्ष्य निर्धारित करना जीवन में प्रत्येक कार्य या परियोजना के लिए निर्धारित एक प्रकार की रणनीति है और प्रगति को बनाए रखने में मदद करती है।

स्वस्थ जीवनशैली

खिलाड़ियों में अक्सर पोषण के प्रति गहरी जागरूकता विकसित हो जाती है, क्योंकि उन्हें किसी भी समय अपनी फिटनेस और संतुलन को सर्वोत्तम स्तर पर बनाए रखने के लिए एक सख्त आहार का पालन करना चाहिए। यह उनके भोजन के समय और मात्रा, सोने के समय और खेल के समय में परिलक्षित होता है। ऐसा अनुशासन उन्हें किसी भी मादक द्रव्य के सेवन से दूर रहने में मदद करने के लिए एक निवारक के रूप में कार्य करता है। एथलीट उन आदतों को समझने के लिए पर्याप्त रूप से शिक्षित होते हैं जो उनके समग्र स्वास्थ्य और मानसिक फिटनेस के स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। प्रतिरोध और व्यवहार भी किसी भी पेशे में इसी तरह की प्रेरणा देते हैं।

आजीवन आनंद

बचपन में जो नींव और धार होती है, उसे वयस्कता या परिपक्वता के चरण में सकारात्मक रूप से देखा जा सकता है। जो लोग खेलों में सक्रिय रूप से सक्रिय रहते हैं, वे अक्सर आशावादी और अपने आसपास ऊर्जा का संचार करते पाए जाते हैं। जिस प्रेरणा से उन्होंने सफलता प्राप्त की है या किसी भी असफलता के लिए उठाए गए कदम, आने वाली पीढ़ी के लिए सबक का स्रोत बनते हैं। इसके अलावा, खेल और उनके अनुभव मनोरंजक आनंद प्रदान करते हैं। ये विभिन्न सामुदायिक लोगों में एक पास बन जाते हैं, क्योंकि खेलों का आनंद एक संपूर्ण और संतुलित जीवन में योगदान देता है।

यह निष्कर्ष निकलता है कि जीत, हार और अन्य शारीरिक या मानसिक लाभों के अलावा, खेल व्यक्ति को लचीला, अनुशासित और सहयोगी व्यक्ति बना सकते हैं। इन्हें देखकर भी कई अमूल्य सबक सीखे जा सकते हैं, लेकिन खेल खेलने से इनका अभ्यास करने में मदद मिलती है।

इरेडा खेल प्रतियोगिताएं और खेल कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। कर्मचारियों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने से न केवल उनका शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर होता है, बल्कि टीम वर्क, समय प्रबंधन और खेल भावना जैसे मूल्य भी विकसित होते हैं, जो जीवन में सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

****

अनुष्का कुमारी
उप प्रबंधक (वित्त एवं लेखा), इरेडा

एआई ने दुनिया को कैसे बदला है

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, या एआई, अब केवल एक भविष्यवादी विचार नहीं रह गया है; यह एक वास्तविकता है जो हमारे जीने, काम करने और दुनिया से जुड़ने के तरीके को बदल रही है। मूल रूप से, एआई उन कंप्यूटर प्रणालियों को संदर्भित करता है जो मानवीय सोच की नकल कर सकती हैं, जैसे सीखना, समझना, समस्या-समाधान और यहाँ तक कि रचनात्मकता भी। गहन शिक्षण और शक्तिशाली कंप्यूटिंग में प्रगति के कारण, एआई अब ऐसे कार्य कर रहा है जिन्हें कभी केवल मनुष्यों के लिए ही माना जाता था। हाल के समय में सबसे उल्लेखनीय विकासों में से एक है जनरेटिव एआई, जो एआई की एक शाखा है, जो केवल बड़े डेटासेट से पैटर्न सीखकर टेक्स्ट, चित्र, संगीत और वीडियो जैसी सामग्री बनाने में सक्षम है। इसमें ऐसे उपकरण शामिल हैं जो निबंध लिख सकते हैं, ग्राफ़िक्स डिज़ाइन कर सकते हैं, संगीत बना सकते हैं, या आवाज़ें और वीडियो उत्पन्न कर सकते हैं, ये सब कुछ ही सेकंड में । प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, इस तकनीक का एक हिस्सा,एआई को समझने और प्रतिक्रिया देने में मदद करता है जो उल्लेखनीय रूप से मानवीय लगता है।

वास्तव में, कई क्षेत्रों में, AI एक विलासिता से एक आवश्यकता बन गई है। उदाहरण के लिए, कृषि में, किसान फसलों की निगरानी, उपज बढ़ाने, लागत बचाने और यहाँ तक कि मृदा स्वास्थ्य की रक्षा के लिए AI-संचालित सेंसर, ड्रोन और भू-स्थानिक उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। स्वास्थ्य सेवा में, AI रोगों का अधिक सटीक निदान करने और व्यक्तिगत देखभाल प्रदान करने में मदद कर रहा है। शिक्षा भी स्मार्ट शिक्षण प्रणालियों से लाभान्वित हो रही है जो प्रत्येक छात्र की गति और शैली के अनुकूल होती हैं।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की कार्यों को स्वचालित करने, सटीकता में सुधार करने और डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि प्रदान करने की क्षमता ने लेखांकन परिदृश्य को बदल दिया है। दूसरी ओर, मनुष्य उन कार्यों में तर्क, रचनात्मकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता लाते हैं जिनमें निर्णय लेने, और सामाजिक समझ की आवश्यकता होती है। इसलिए, समग्र प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मानव बुद्धिमत्ता (HI) को एक साथ काम करने की आवश्यकता है। जब मनुष्य और मशीनें एक साथ सोचना सीख जाते हैं, तो हम अकेले की तुलना में कहीं आगे जा सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव बुद्धिमत्ता का विकल्प नहीं है; यह मानव रचनात्मकता और सरलता को बढ़ाने का एक उपकरण है।

****

गौरव वार्ष्णेय
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा), इरेडा

गोइंग कंसर्न (चलित व्यवसाय)

लेखांकन सिद्धांतों के अनुसार, एक कंपनी जिसका जीवन अनिश्चित काल तक चलने वाला हो, उसे **'गोइंग कंसर्न' (चलित व्यवसाय)** कहा जाता है। यह अवधारणा व्यवसाय की निरंतरता और दीर्घकालिक स्थिरता पर आधारित है। इसी प्रकार, हमारी पृथ्वी भी अरबों वर्षों से अस्तित्व में है और भविष्य में भी लंबे समय तक बनी रहने की उम्मीद है। हालाँकि, विडंबना यह है कि अतीत में ग्रह का तापमान अत्यंत चरम और निर्जन था, लेकिन यह उसके अस्तित्व के लिए कोई खतरा नहीं था। पृथ्वी ने स्वयं को बार-बार पुनर्जीवित किया है, लेकिन अब मानवीय गतिविधियाँ इसकी स्थिरता के लिए खतरा बन गई हैं।

मानव अस्तित्व की नाजुकता

पृथ्वी पर मनुष्यों का अस्तित्व तापमान, वायु की गुणवत्ता और जल की शुद्धता के एक **संकीर्ण सीमा** में निरंतर बने रहने पर निर्भर करता है। ब्रह्मांडीय दृष्टि से देखें तो हम नाजुक प्राणी हैं, जो इन संकीर्ण सीमाओं के भीतर आदर्श परिस्थितियाँ नहीं बनी रहने पर नष्ट हो जाएँगे। आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हमारे अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा बन चुका है।

विकास और उपभोग की चुनौतियाँ

अनियंत्रित उपभोग वृद्धि और तेजी से बढ़ती जनसंख्या, पृथ्वी पर रहने योग्य वातावरण के लिए खतरे का मूल कारण है। औद्योगीकरण और आधुनिक जीवनशैली ने प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला है। वनों की कटाई, जल संकट और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ दिन-प्रतिदिन विकराल होती जा रही हैं। तकनीकी समाधान लंबे समय में इन मुद्दों को हल कर सकते हैं, लेकिन किफायती तकनीकों की खोज जो सभी समस्याओं को हल करे और समाधानों के दुष्प्रभावों को नियंत्रित करे, अनिश्चित बनी रहेगी।

सामूहिक जिम्मेदारी और सतत विकास

अंततः, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम भविष्य की पीढ़ियों की रहने की स्थितियों को उनकी जिम्मेदारी मानते हैं या नहीं। यह बदले में इस बात पर निर्भर करता है कि हम समस्त अस्तित्व की परस्पर जुड़ाव को कितना समझते हैं। भारतीय दर्शन और संत कबीर की शिक्षाएँ हमें यह समझाती हैं कि प्रकृति और मानव जीवन एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। कबीर ने कहा था – **"चारों दिसि जागिरी माँही"** (चारों दिशाओं में जागृति है), यानी संपूर्ण ब्रह्मांड उनकी निजी संपत्ति थी। उनकी करुणा सब कुछ को एक 'चलित व्यवसाय' (गोइंग कंसर्न) के रूप में समेटती थी।

सचेत उपभोग और भविष्य की दिशा

इसी तरह, **सचेत और संयमित उपभोग** का मार्ग इस ग्रह की रहने की स्थितियों को एक सतत चलने वाली व्यवस्था में बदल सकता है। हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहना होगा, तभी पृथ्वी एक 'गोइंग कंसर्न' के रूप में सतत विकास कर पाएगी। सरकारों, निजी संस्थानों और नागरिकों को मिलकर पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा और जल संरक्षण जैसे क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। केवल तभी हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर पाएँगे।

निष्कर्ष

पृथ्वी को एक 'चलित व्यवसाय' के रूप में बनाए रखने के लिए हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने होंगे। प्रकृति के साथ सहयोग, संयमित उपभोग और तकनीकी नवाचारों का समन्वय ही हमें एक स्थायी भविष्य की ओर ले जा सकता है। जैसा कि कबीर ने कहा, हमें चारों दिशाओं में जागरूकता फैलानी होगी, तभी पृथ्वी एक सतत 'गोइंग कंसर्न' बनी रह सकेगी।

****

हजारी लाल
प्रोटोकॉल अधिकारी, इरेडा

हमारा संविधान

"हमारा संविधान का हिंदी में मतलब है "भारत का संविधान ""। यह भारत का सर्वोच्च कानून है जो सरकार की संरचना, शक्तियों, कर्तव्यों और नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों को निर्धारित करता है. इसे 26 नवंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था और 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था ।

भारत का संविधान, जिसे भारतीय संविधान" भी कहा जाता है", एक लिखित दस्तावेज है जो सरकार के बुनियादी ढांचे, प्रक्रियाओं, शक्तियों और कर्तव्यों को निर्धारित करता है. यह नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों को भी परिभाषित करता है ।

संविधान सभा ने 26 नवंबर, 1949 को संविधान को अपनाया और यह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ, जिसे भारत में गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

संविधान में 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियां थीं, लेकिन समय के साथ, इसमें संशोधन किए गए हैं और अब इसमें 448 अनुच्छेद, 25 भाग और 12 अनुसूचियां हैं ।

संविधान का निर्माण 2 साल, 11 महीने और 18 दिनों में किया गया था, जिसमें संविधान सभा के सदस्यों ने 166 दिनों तक 11 सत्रों में बहस की थी ।

भारत का संविधान दुनिया का सबसे लंबा लिखित राष्ट्रीय संविधान है ।

संविधान के कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं :

मौलिक अधिकार
संविधान नागरिकों को छह मौलिक अधिकार प्रदान करता है । समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार, और संवैधानिक उपचार का अधिकार ।

राज्य के नीति निर्देशक तत्व
ये तत्व सरकार को सामाजिक और आर्थिक न्याय प्रदान करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं ।

मौलिक कर्तव्य
संविधान नागरिकों को कुछ मौलिक कर्तव्य भी प्रदान करता है, जैसे कि संविधान का पालन करना, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना, और देश की एकता और अखंडता को बनाए रखना ।

संसदीय प्रणाली
भारत में संसदीय सरकार की एक प्रणाली है, जिसमें राष्ट्रपति राज्य का प्रमुख होता है और प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है ।

सघीय ढांचा
भारत एक संघीय राज्य है, जिसमें केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का विभाजन होता है ।

संविधान भारत के नागरिकों के लिए एक मार्गदर्शक दस्तावेज है और यह सुनिश्चित करता है कि देश लोकतांत्रिक सिद्धांतों और मूल्यों के अनुसार शासित हो ।

संविधान सभा
- भारत का संविधान, संविधान सभा द्वारा तैयार किया गया था, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों और समुदायों के प्रतिनिधि शामिल थे ।
- संविधान सभा ने 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिनों में संविधान का निर्माण किया ।

महत्व
- भारत का संविधान देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।
- यह नागरिकों को उनके अधिकार और कर्तव्य प्रदान करता है ।
- यह सरकार को एक मजबूत और स्थिर प्रणाली प्रदान करता है ।
- यह देश को एक लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण समाज बनाने में मदद करता है ।

******

शुभम सिंह
कार्यपालक प्रशिक्षु, इरेडा

वैश्विक संघर्ष एवं भविष्य के लिए सुझाव

आज के अशांत समय में, **"संघर्ष"** शब्द सिर्फ़ एक सुर्ख़ी नहीं रह गया है अपितु यह दुनिया की स्थिति बन गया है। लगातार चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध से, जो यूरोप और वैश्विक ऊर्जा बाज़ारों को अस्थिर कर रहा है, गाज़ा में बढ़ती त्रासदी, जहाँ नागरिक जीवन हिंसा के अंतहीन चक्र में फँस गया है यह दर्शाता है की वैश्विक परिदृश्य युद्ध और शत्रुता से ग्रस्त है। अफ्रीका में, सूडान में गृहयुद्ध और साहेल क्षेत्र में अस्थिरता मानवीय संकटों को और बढ़ा रही है। इस बीच, दक्षिण चीन सागर और ताइवान जलडमरूमध्य में तनाव हमें याद दिलाते हैं कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भू-राजनीतिक दरारें चौड़ी हो रही हैं। ये संघर्ष छिटपुट घटनाओं से कहीं बढ़कर, सैन्यीकरण, अविश्वास और बहुध्रुवीय प्रतिद्वंद्विता में धँसती दुनिया के परस्पर जुड़े हुए लक्षण हैं।

ये युद्ध सिर्फ़ सीमाओं को ही नया आकार नहीं दे रहे हैं बल्कि ये दुनिया की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और समाजों को भी नया आकार दे रहे हैं। आर्थिक रूप से मुद्रास्फीति, बाधित आपूर्ति श्रृंखलाएँ और तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव विकसित और विकासशील, दोनों देशों में अस्थिरता पैदा कर रहे हैं। पर्यावरणीय दृष्टिकोण से, युद्ध क्षेत्र प्रगति के कब्रिस्तान बनते जा रहे हैं। सामाजिक रूप से, एक पूरी पीढ़ी शरणार्थी शिविरों में शिक्षा, स्थिरता या आशा के बिना पल रही है। ड्रोन से लेकर डीपफेक तक तकनीकी विकास को तेज़ी से हथियार बनाया जा रहा है ।

एक अधिक शांतिपूर्ण भविष्य बनाने के लिए, हमें प्रतिक्रियात्मक कूटनीति से आगे बढ़कर स्थायी शांति के लिए एक संरचित वैश्विक ढाँचे की ओर बढ़ना होगा। संयुक्त राष्ट्र, हालाँकि अभी भी परिपूर्ण नहीं है, फिर भी हमारी सबसे अच्छी शर्त है। इसकी भूमिका को संघर्ष समाधान से संघर्ष निवारण में बदलने की आवश्यकता है, जिसमें विवादों के भड़कने से पहले मध्यस्थता करने के लिए अधिक अधिकार और हमलावरों को जवाबदेह ठहराने के लिए एक मज़बूत जनादेश हो। आर्थिक साधनों—प्रतिबंधों, व्यापार समझौतों और निवेश प्रोत्साहनों—को न केवल दंड देने के लिए, बल्कि युद्धरत देशों को संवाद और सुधार की ओर प्रेरित करने के लिए भी किया जा सकता है। शांति को केवल एक नैतिक लक्ष्य के रूप में नहीं, बल्कि एक आर्थिक अनिवार्यता के रूप में देखते हुए।

वैश्विक शांति संरचना के इस पुनर्निर्माण में, भारत अद्वितीय क्षमता रखता है। एक ऐसे राष्ट्र के रूप में जिसने ऐतिहासिक रूप से निरपेक्षता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की वकालत की है, भारत की आवाज़ पश्चिम और पूर्व की सीमाओं से परे गूंजती है। वैश्विक उत्तर और दक्षिण, दोनों के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में इसका बढ़ता कद इसे खंडित वैश्विक संवादों में एक सेतु के रूप में कार्य करने की अनुमति देता है। चाहे **"एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"** पर ज़ोर देने वाली अपनी **G20 अध्यक्षता** के माध्यम से हो या बिना किसी पक्ष का चयन किए संघर्ष क्षेत्रों में अपनी मानवीय सहायता के माध्यम से, भारत रणनीतिक सहानुभूति का उदाहरण प्रस्तुत करता है। **"वसुधैव कुटुम्बकम - विश्व एक परिवार है"** के अपने गहन सभ्यतागत मूल्यों के साथ, भारत वैश्विक शांति

निर्माण के प्रयासों को प्रेरित, मध्यस्थता और नेतृत्व कर सकता है, शक्ति से नहीं, बल्कि नैतिक नेतृत्व के माध्यम से।

विश्व वास्तव में युद्ध में है, लेकिन यह एक दोराहे पर भी खड़ा है। वैश्विक मूल्यांकन के इस दौर में, भारत जैसे राष्ट्र विश्व को संघर्ष से दूर और साझा शांति, समृद्धि और उद्देश्यपूर्ण भविष्य की ओर ले जाने में मदद कर सकते हैं।

****

राहुल राज
कार्यपालक प्रशिक्षु(परियोजना), इरेडा

हिन्दी का सम्मान

'हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान' कहते तो हैं सब सीना तान,
पल भर को सोचें, ऐ इन्सान,
क्या हम रख पाते हैं इसका सच्चा मान?
क्या बस १४ सितम्बर को ही जागता है,
राष्ट्रभाषा के लिए यह सम्मान?
सबकी सखी है मेरी हिन्दी,
जैसे माथे पर सजी सुन्दर बिन्दी।
देवनागरी इसकी लिपि है,
संस्कृत से जन्मी, यह अनमोल निधि है।
सुन्दर, सरल है इसकी भाषा,
प्रेम और अपनेपन की है परिभाषा।
अतः नित्य कार्यों में प्रयोग में लाएँ,
सूत्र भाषा के रूप में सफल बनाएँ।

****

तुलसी
वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी), इरेडा

"सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति – एक आध्यात्मिक यात्रा"

सकारात्मक ऊर्जा – यू तो मैंने अपनी जिंदगी में बहुत सी यात्राएँ की हैं, पर यह यात्रा कुछ खास थी, जो मैं कभी भूल नहीं सकती । मेरी जिंदगी में सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) की शुरूवात कहां से हुई, आज इस लेख के माध्यम से मैं आपको बताऊंगी ।

यूँ तो मैंने अपनी जिंदगी में सकारात्मक ऊर्जा के बारे में बहुत लोगों से सुना था - सोशल मिडिया, यूट्यूब, इंस्ट्राग्राम आदि से सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) के बारे में सुना तो था, पर कभी इसे महसूस नहीं कर पाई कि यह होती क्या है । सकारात्मक ऊर्जा को कैसे महसूस किया जाता है ?

मैंने इस सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) के महत्व को जानना चाहा ताकि मैं भी और लोगों की तरह महसूस कर सकूँ और बता सकूँ कि आखिर यह कैसी होती है । तो इस सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) को महसूस करने के लिए मैं और मेरी फ्रेंड ने वृंदावन जाने का प्लान किया और हम निकल गए वृंदावन कि ओर पर सबसे पहले हम बरसाना गए **'राधा रानी'** के दर्शन करने कहा जाता है कि अगर पहले बरसाना में राधा-रानी के दर्शन करके **बांके बिहारी मंदिर** जाते है जो कृष्ण जी उनकी मनोकामना जल्दी सुनते है क्योंकि उनको अपने भक्तों में से अपनी राधा-रानी की खुशबू आ जाती है । इसलिए हम पहले बरसाने गए राधा-रानी के दर्शन करने । उसके बाद हम वहां से गोवर्धन पर्वत गए । गोवर्धन पर्वत की प्रक्रिमा हमने ई-रिक्शे से की हमने प्रक्रिमा करते-करते रास्ते में कई बंदरों को केले भी खिलाएं और उनको इस तरह से केले खाकर देखकर मन में अच्छा सा लग रहा था । प्रक्रिमा के दौरान मैने देखां वहां कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को भईया, अंकल कहकर नहीं बुला रहे थे बल्कि सब एक दूसरे को राधे बोलकर बुला रहे थे यह मेरे दिल को छू गई कि हम लोग भगवान को कभी याद नहीं करते जब मुसीबत में होते है तब भगवान को याद करते है और यहां तो हर टाइम सबकी जुबान में राधा नाम आ रहा है जो मेरी इस यादगार यात्रा का एक पल था ।

उसके बाद हम रात में निकल गए प्रेम मंदिर की ओर प्रेम मंदिर के मुख्य मंदिर के बारे में जाना कि इसका निर्माण जगद्‌गुरु कृपालु महाराज जी द्वारा किया गया है, जो बहुत ही सुंदर और भव्य था । जिसे देखकर मजा ही आ गया । मंदिर में राधा-कृष्ण की सुंदर झांकिया देखीं और बैकग्राउंड में जब 'राधे-राधे' की धुन बज रही थी, तो वह क्षण बहुत ही सुखद था । वहां सभी भक्तों को राधा नाम का जप देखकर ऐसा लगा कि जैसे किसी को कोई टेंशन ही नहीं है । उन्हीं सब भक्त जनों में से एक मैं और मेरी फ्रेंड भी थी । हम भी और भक्तों की तरह राधा नाम का जप करके झूम रहे थे । उसके बाद हम इस्कॉन मंदिर भी गए वहां भी सभी भक्त राधा नाम का जप कर रहे थे और यह सब देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा था और मेरे चेहरे पर खुद-ब-खुद ही स्माइल आ रही थी और मैं तो अपनी सारी टेंशन भूल ही गई थी । उसके बाद जब हम सुबह **बांके बिहारी मंदिर** में गए तो वहां जाकर देखा कि मंदिर की लाइन बहुत ही लंबी थी जिसके बारे में हमने पहले भी सुना था कि यहां बहुत भीड़ होती है और यहां आकर आज हमने अनुभव भी कर लिया था परंतु उस भीड़ में भी अपना ही मजा था क्योंकि सब भक्त गाना गाते हुए राधा नाम लेते हुए लाइन में आगे की ओर चलते जा रहे थे । फिर हम पहुँचे

मंदिर के अंदर जहां हमने **बांके बिहारी जी** के दर्शन किए वहां सभी भक्त जन राधे-राधे बोल रहे थे । राधे -राधे की गूंज और बांके बिहारी जी की छवि को देखकर मेरी आंखों से आसू निकलने लगे । मुझे वहां इतना अच्छा लगा कि मैं वो फिलिंग किसी को बता नहीं सकती । वहां जाकर मुझे पहली बार महसूस हुआ कि सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy) होती क्या है । उसके बाद हम निधिवन गए निधिवन के रहस्य को जानकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए ।

अब जब हम घर को वापिस आ रहे थे तो मैं अपनी फ्रेंड को बार-बार बोल रही थी कि हम दोबारा जाएंगे वृंदावन क्योंकि घर आकर भी वहां कि वो सब यादें – राधे कहकर बुलाना, राधा नाम की गूंज, भक्तों की श्रद्धा वो सब मुझे याद आ रहा था । भगवान की महिमा देखों मैं 6 महीने से पहले दुबारा वहां घूमकर आ गई और जब भी मैं वहां जाती हूँ तो एक नई एनर्जी महसूस हुई है । मेरा वहां जाकर मन शांत हो जाता है ।

आप सब भी एक बार वृंदावन जाकर **'राधे-राधे'** बोलकर उस **सकारात्मक ऊर्जा (Positive Energy)** को ज़रूर महसूस करें ।

****

प्रवीण कुमार झा,
सहायक महाप्रबंधक(भर्ती)
भारत संचार निगम लिमिटेड

स्वास्थ्य की संजीवनी हंसी

उपनिषदों में कहा गया है शरीर रथ है, बुद्धि सारथी है, इंद्रियां घोड़े हैं और जीवात्मा इसका रथी है, जो मोक्ष रूपी लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है । इसमें बार-बार दुहराया गया है कि - "शरीर स्वस्थ हो, मन स्वच्छ हो और तन-मन दोनों अनुशासन में रहें।" एक स्वस्थ व्यक्ति तो अपना जीवन सुगमता से व्यतीत कर सकता है, पर अस्वस्थ व्यक्ति का जीवन अनेक कठिनाइयाँ से ग्रसित होने के कारण अपना जीवन ही भार स्वरूप लगने लगता है । निरोगी काया को सबसे अच्छा धन माना गया है, क्योंकि अच्छी सेहत ही धन को उपभोग करने में मदद कर सकती है । लेकिन आज की फास्ट जीवन शैली में बहुत ही कम लोग हैं जो इस सच्चे धन को संभालने का प्रयास करते हैं । हम अगर सेहत पर थोड़ा सा ध्यान दें तो न सिर्फ हमेशा स्वस्थ रह सकते हैं, बल्कि अपने सभी कार्यों को भी ठीक से निष्पादन कर सकते हैं और राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। ऐसा माना गया है किसी भी देश की सबसे बड़ी संपति स्वस्थ नागरिक है ।

आज की भागम भाग जिंदगी में हम कई तरह के तनावों से जूझ रहे हैं । घर, परिवार, समाज व राष्ट्र की चिंता हमें सताती है जिस कारण शरीर और मन दोनों रुग्ण बना जा रहा है । वर्तमान परिवेश में सामाजिक अलगाव जीवन की एक ऐसी शैली बनती जा रही है, जिसका सीधा संबंध हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है । इस सबसे निजात पाने का सबसे बड़ा संजीविनी हंसी मे है । जब भी आप किसी प्रकार के तनाव में हो अपने दिल दिमाग के मधुर स्मृतियों में अवस्थित हास्यपूर्ण घटनाओं, चुटकुले को याद कर हंस-हंसकर लोटपोट हो जाए, बस आपका तनाव दूर होने में अधिक समय नहीं लगेगा । जिंदगी में हंसी उस दवा की तरह है जो इंसान के दुखों और घावों को ठीक करने में सबसे ज्यादा असरदायक है । हंसने से व्यक्ति की सोच, दिल और दिमाग सकारात्मक हो जाता है । हंसी वह चमत्कारिक क्रिया है, जिससे तमाम समस्याओं का समाधान अपने आप ही हो जाता है।

हंसी रूपी दवाई हमारे खुशी हार्मोन डोपामिन के स्तर को बढ़ाता है, जो मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ तनाव को कम करता है और इससे आनंद का अनुभव होता है । हमारे मस्तिष्क में डोपामाइन नामक एक हार्मोन होता है जो एक न्यूरो ट्रांसमीटर के रूप में कार्य करता है । यह हमारी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के लिए जिम्मेदार होता है जो कि सकारात्मक भावनाओं जैसे खुशी और प्रेरणा को व्यक्त करता है । हंसने से पीनियल एवं पिट्यूटरी ग्रंथि प्रभावित होने के कारण शरीर में तमाम तरह के लाभकारी व गुणकारी हारमोंस पैदा होते हैं । इसलिए हंसना रोग मुक्ति, अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु का प्रतीक व पर्याय माना गया है, साथ ही बढ़ते उम्र संबन्धित जटिलताओं से निदान भी इसमें अंतर्निहित है।

हंसने से तनाव बढ़ाने वाले हार्मोन कम होते हैं तथा रक्त संचार और हृदय की मांसपेशियों को शुद्ध ऑक्सीजन प्राप्त होती है । डॉक्टर के अनुसार हंसी से शरीर में एंडोर्फिन का स्तर बढ़ता है जो स्वत: ही दर्द निवारक माना जाता है। अर्थराइटिस, स्पॉन्डिलाइटिस और मांसपेशियों के खिंचाव से त्रस्त लोग जब हंसते हैं तो एंडोर्फिन का सृजन होता है जिससे दर्द में कमी आती है । अस्थमा और ब्रोंकाइटिस से पीड़ित लोगों के लिए हंसना बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है । हंसने से जीवन में

खुशी आती है और खुशी इंसान की सोच और व्यवहार दोनों को सकारात्मक बना देती है। दिमाग के बंद दरवाजे खोल देती है और इंसान को ऊर्जा से भर देती है । आप ऊर्जावान होंगे, तभी समाज को ऊर्जा दे पाएंगे क्योंकि जिसके पास जो होगा वही वो समाज को देगा । रोता हुआ व्यक्ति दुख ,बीमार व्यक्ति बीमारी और हंसता खिलखिलाता हुआ व्यक्ति हंसी-खुशी आनंद बाटेंगा । आप वही दे सकते हैं जो आपके पास है ।

हंसी कई रूप में वरदान है । हंसी आपके जीवन में कभी निराश नहीं होने देती। हंसने से दिल बाग- बाग हो जाता है । दुख की उल्टी गिनती बहुत जल्दी शुरू हो जाती है । हंसने से आत्मविश्वास बढ़ता है । हंसने से इमोशंस को कंट्रोल में रखने की क्षमता बढ़ती है । हंसी से पैदा होती है सकारात्मक सोच । खूबसूरत चेहरा पाने के लिए यह अच्छा व्यायाम है । हंसी से टेंशन और डिप्रेशन कम होता है । यह नेचुरल पेन किलर का काम करती है । हंसी शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढाती है। हंसी अवसाद और चिंता को कम करने में मदद करती है । हंसी ब्लड सर्कुलेशन को कंट्रोल करती है ।

जोरदार हंसी कसरत का भी काम करती है जो कि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोतरी करती है । इससे काम करने की क्षमता बढ़ती है । यह आत्मविश्वास और व्यक्तित्व निखारने में योगदान करती है। इसे नेचुरल कॉस्मेटिक भी कह सकते हैं क्योंकि इससे चेहरा खूबसूरत बनता है । खुशमिजाज लोगों के सोशल और बिजनेस कांटेक्ट भी ज्यादा होते हैं ।

हंसी रिश्तों को मजबूत बनाने के काम आती है । जब आप हँसते है, तो रिफलेक्ट लाफ़्टर से सामने वाला बच नहीं सकता है । वह भी आप की तरफ देख के हंसेगा ओर आकर्षित करेगा । हर तरह की लड़ाई - झगड़े से बचाती है, हंसी । इससे आत्मविश्वास की बृद्धि होती है, जिससे समूह में काम करना आसान हो जाता है । हंसी में सच और शिकायत दोनों बातें साथ रखने की क्षमता होती है । आप दूसरों को बिना हर्ट किए अपनी शिकायत व्यंग्य के रूप में दर्ज कर सकते हैं । जिंदगी में घटी दुर्घटनाओं से उबरने का उपाय है हंसी । कठिन समस्याओं का समाधान है हंसी । हंसी आपको कार्यकुशल बनाता है । इससे जिंदगी में आनंद और उत्साह का संचार होता है । आपके दोस्तों का ग्रुप बढ़ता है और समाज में आपकी इज्जत और लोकप्रियता बढ़ती है । अगर आप हंसमुख है तो जल्दी किसी विपरीत परिस्थिति के दबाव में नहीं आते और बेहतर मूड में होते हैं।

हंसने से अधिक मात्रा में ऑक्सीजन मिलने से कैंसर कोशिका और कई प्रकार के हानिकारक बैक्टीरिया एवं वायरस नष्ट हो जाते हैं जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता, सकारात्मक ऊर्जा एवं आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हो जाती है। डिमेंशिया तथा एलजाइमर्स से पीड़ित रोगियों को हंसी के प्रति बढ़िया रेस्पॉन्ड करते पाया गया है । हंसने से रक्तचाप हृदय रोग, अस्थमा, मानसिक उत्तेजना, अनिद्रा, डिप्रेशन ठीक होता है । हंसी से जठराग्नि तीव्र तथा पाचक तत्व सक्रिय होने से भोजन ठीक से तथा शीघ्र पचता है । हंसने वाले व्यक्ति का व्यवहार तथा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है। हंसना मनोविनोद है और हंसी की तुलना किसी भी एरोबिक व्यायाम से की जा सकती है, क्योंकि हंसने से रक्त संचार में आए गति उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती है । माना गया है कि कैंसर तथा अन्य क्रॉनिक बीमारियों से ग्रस्त बिस्तर पर पड़े मरीजों हेतु हंसी एक बहुत ही अच्छा व्यायाम है ।

हंसी से आंतरिक अंगों की मसाज होती है जो स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है ।हंसी से चेहरे की मांसपेशियों का व्यायाम होता है जिससे चेहरे का निखार बढ़ जाता है । हंसते समय चेहरे के 15 मांसपेशियां एक साथ काम करती है जिस चेहरे की झुर्रियां दूर होती है । मन प्रसन्न तथा रात में नींद अच्छी आती है । इसमें सुंदरता तथा चेहरे की चमक बनी रहती है । हंसने से चिंता और चिड़चिड़ापन दूर होते हैं । कैलोरी खर्च करने और वजन घटाने में हंसी सहायक सिद्ध होता है । हंसमुख व्यक्ति जीवन में आने वाले चुनौतियों का सामना हँसते खेलते कर लेता है क्योंकि हंसने से आत्मविश्वास बढ़ता है और व्यक्ति का मानसिक स्तर को बढ़ता है ।

हंसी एक ऐसा टॉनिक है जो आपके अंदर खुशियों की ताकत देता है । आप जब खुलकर हँसते है उस समय शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है । सारे अंगों को अच्छी तरह से

ऑक्सीजन मिलने पर पूरे शरीर में फुर्ती आ जाती है, मन खुशियों से भर जाता है। हंसने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है । यह ख़ुशी, एकाग्रता, मनन को भी बढ़ाती है ।

हंसी वह रामबाण है जो न जाने कितने ही औषधीय गुणों को समेटे हुए हैं । जब हम हंसते हैं तो हमारे भीतर व्याप्त कई विकार बाहर निकल जाते है, जिससे तन - मन हल्का हो जाता हैं । ऐसे में हमारी सोच यह होनी चाहिए कि जिंदगी में मिले दुखों को बहुत ज्यादा दिल से न लगाएँ । छोटी-छोटी समस्या को दिमाग में हावी न होने दें, बल्कि छोटी-छोटी बातों में खुशी तलाशें और हंसने का कोई भी मौका कभी ना छोड़े । साथ ही, जेहन में यह भी रखना होगा कि हंसमुख और खुश चेहरा आपके दुश्मनों के लिए बहुत बड़ी सजा है, इसलिए हमेशा खुश और मुसुकुराते रहिए ताकि हम स्वस्थ बने रहें।

****

राजेश मिश्रा
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, इरकॉन

माँ का अनमोल प्यार: एक बचपन की घटना

मैं लगभग चार साल का था, जब बारिश के मौसम में हमारे घर में पानी भर गया था। मैं स्कूल के लिए तैयार हो रहा था, तभी अचानक एक सांप मेरे पैर के पास से निकलने वाला था। मेरी अम्मा ने मेरी ओर देखा और बिना एक पल गंवाए, मेरे हाथ को पकड़कर मुझे ऊपर की ओर खींच लिया और पलंग पर बिठा दिया। उस समय अम्मा मेरी बहन को कंघी कर रही थीं, उनके एक हाथ में कंघी थी, लेकिन उन्होंने दूसरे हाथ से मुझे बचाने के लिए इतनी शक्ति और तेज़ी दिखाई कि मैं पलक झपकते ही सुरक्षित जगह पर पहुँच गया। सांप पानी के साथ बाहर चला गया।

इसके बाद, अम्मा ने मुझे स्कूल तक छाते के साथ छोड़ा ताकि मैं बारिश के कारण भीग न सकूं। उनकी इस छोटी सी घटना ने मुझे सिखाया कि माँ का प्यार सबसे अनमोल है, और यह हमें हर मुश्किल समय में सहारा देता है।

आज भी जब मैं उस पल को याद करता हूँ, मेरे दिल में अम्मा के प्रति सम्मान और प्यार और भी बढ़ जाता है। उनकी ममता और प्यार ने मुझे जीवन भर के लिए एक सीख दी है, जो मुझे हमेशा अपने रास्ते में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करती है। माँ का आशीर्वाद और उनका प्यार हमेशा हमारे साथ होता है, और यही हमें जीवन की हर चुनौती का सामना करने की ताकत देता है।

****

कुसुम मिड्ढा
प्रबंधक(राजभाषा)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

उदास मत होना जीवन से

उदास मत होना जीवन से, ये राहें अभी बाकी हैं,
हर साँझ के बाद सवेरा है, ये रातें अभी बाकी हैं।

जो टूटा है, वो जुड़ जाएगा, समय की औषधि है साथ,
हर आँसू में छुपी होती है, इक मुस्कान की सौगात।

गिरकर उठना ही जीवन है, रुक जाना तो हार है,
धूप सहकर खिलता है जो, वही तो असली प्यार है।

हर जख़्म कहानी बनता है, हर चुप्पी में स्वर होते हैं,
जो सह गया चुपचाप सबकुछ, वही असल में वीर होते हैं।

मत देखो खुद को टूटता, हर पल में जीवन पलता है,
जो बीत गया वो कल था बस, आज नया सूरज चलता है।

मत मांगो राहें आसान सी, कांटे भी कुछ सिखाते हैं,
दर्द ही जीवन का रस है, ये गीत वही तो गाते हैं।

आँखें नम हों, कोई बात नहीं, पर दिल में उम्मीद बची रहे,
संघर्षों की धूल में भी, सपनों की एक किरण सजी रहे।

उदास मत होना जीवन से, ये मौसम फिर हरे होंगे,
जिन राहों में कांटे हैं आज, कल वहीं गुलाब खिले होंगे।

****

सत्येन्द्र कुमार दूबे
अनुवाद अधिकारी
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

राजभाषा का विकास: सरकारी कामकाज के संदर्भ में

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहाँ विविध भाषाएं और बोलियाँ सदियों से फलती-फूलती रही हैं। ऐसी विविधता भरे देश में एकता का माध्यम बनने वाली भाषा को केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण के औजार के रूप में देखा गया। इसी दृष्टिकोण से राजभाषा हिंदी का चयन संविधान निर्माताओं ने किया और इसे भारत की राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। भारत में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग का इतिहास, विकास और वर्तमान स्वरूप एक सांस्कृतिक, संवैधानिक और प्रशासनिक यात्रा की गाथा है।

संविधान और राजभाषा नीति

भारतीय संविधान के भाग XVII (अनुच्छेद 343 से 351) तक राजभाषा से संबंधित प्रावधान दिए गए हैं। अनुच्छेद 343 (1) में यह स्पष्ट किया गया कि—

"भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।"

इसके साथ ही यह भी कहा गया कि अंग्रेज़ी भाषा को सहायक राजभाषा के रूप में 15 वर्षों तक (1950 से 1965) प्रयोग में लाया जाएगा। किंतु, सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए अंग्रेज़ी के प्रयोग की अवधि को बाद में भी बढ़ाया गया। आज दोनों भाषाएं – हिंदी और अंग्रेज़ी – सरकारी कार्यों में समान रूप से प्रयोग में लाई जाती हैं।

राजभाषा विभाग की स्थापना और भूमिका = सरकारी कार्यों में हिंदी के क्रियान्वयन के लिए 1975 में गृह मंत्रालय के अधीन 'राजभाषा विभाग' की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य था:

- भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना,
- राजभाषा नियमों और नीतियों की निगरानी करना,
- हिंदी प्रशिक्षण, अनुवाद और निरीक्षण जैसी योजनाओं को लागू करना।

राजभाषा विभाग की प्रमुख भूमिका प्रशासन में हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित करना और एकरूपता एवं सुगमता लाना रहा है।

सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रारंभिक प्रयोग- आजादी के बाद के शुरुआती वर्षों में, अधिकांश प्रशासनिक काम अंग्रेज़ी में होता था। हिंदी को कार्यालयों की भाषा बनाने के लिए प्रारंभ में 'राजभाषा नियम 1976' लागू किए गए, जिसमें यह बताया गया कि:

- किस प्रकार के दस्तावेज हिंदी में तैयार किए जाएंगे,
- पत्राचार किन क्षेत्रों में हिंदी में होना अनिवार्य होगा,
- प्रशिक्षण और अनुवाद की व्यवस्था कैसे की जाएगी।

इस नियमावली में कार्यान्वयन की दिशा में तीन क्षेत्र (क, ख और ग) बनाए गए:

- क क्षेत्र – वे राज्य जहाँ हिंदी प्रमुख भाषा है (जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार आदि)।
- ख क्षेत्र – वे राज्य जहाँ हिंदीभाषी जनता बड़ी संख्या में है, पर हिंदी मुख्य भाषा नहीं है।
- ग क्षेत्र – वे राज्य जहाँ हिंदी बोलने वालों की संख्या नगण्य है (जैसे तमिलनाडु, केरल आदि)।

हिंदी प्रशिक्षण और अनुवाद प्रणाली

सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम बनाने हेतु केंद्र सरकार ने तीन प्रकार के प्रशिक्षण प्रारंभ किए:

- प्रगतिशील हिंदी प्रशिक्षण
- कार्यालयी हिंदी प्रशिक्षण
- नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रशिक्षण

इन प्रशिक्षणों के माध्यम से कर्मचारियों को हिंदी में फाइल बनाना, टिप्पणियाँ लिखना, रिपोर्ट तैयार करना, एवं पत्राचार करना सिखाया जाता है।

इसके अतिरिक्त, हर मंत्रालय/विभाग में राजभाषा अनुभाग और अनुवाद विभाग की स्थापना की गई ताकि अंग्रेज़ी में तैयार दस्तावेजों का हिंदी में अनुवाद हो सके। इसके लिए तकनीकी शब्दावली, द्विभाषिक शब्दकोश, और सॉफ़्टवेयर सहायता भी प्रदान की गई।

तकनीकी युग में राजभाषा का विकास

डिजिटल युग में हिंदी का प्रयोग और भी प्रभावी हुआ है। ई-ऑफिस, ई-गवर्नेंस, डिजिटल इंडिया, माईगव, और भारत सरकार की वेबसाइटें अब द्विभाषिक (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में प्रस्तुत की जाती हैं।

राजभाषा विभाग ने 'रजभाषा गंगा', 'अनुभाषिनी', 'श्रुतलेख', 'मानक', 'राजभाषा शब्दसागर' जैसे टूल्स विकसित किए हैं, जिससे ई-कार्यालय में हिंदी का प्रयोग सुलभ और तेज़ हुआ है।

सी-डैक, गूगल ट्रांसलेट, और अन्य संस्थानों द्वारा हिंदी में वर्चुअल टाइपिंग, स्पीच टू टेक्स्ट, तथा अनुवाद सेवाएं उपलब्ध कराई गई हैं।

निरीक्षण, समीक्षा और पुरस्कार प्रणाली

राजभाषा विभाग प्रत्येक वर्ष सरकारी कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण करता है ताकि यह देखा जा सके कि:

- हिंदी में कितनी फाइलें बनीं,
- पत्राचार कितना हुआ,
- कितने प्रशिक्षण आयोजित हुए,
- हिंदी में साइनबोर्ड और संकेतक लगे हैं या नहीं।

जो कार्यालय या अधिकारी हिंदी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य करते हैं, उन्हें 'इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार', 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार', और 'राजभाषा गौरव सम्मान' जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

संसद की समितियाँ और राजभाषा आयोग

राजभाषा पर संसदीय समिति की स्थापना संविधान के अनुच्छेद 344(4) के तहत की गई, जो समय-समय पर हिंदी के क्रियान्वयन की समीक्षा करती है और सुझाव देती है। समिति की रिपोर्टें भारत सरकार की नीतियों को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इसी तरह, राजभाषा आयोग का गठन विशेषज्ञों की सहायता से हिंदी के प्रयोग के लिए सिफारिशें देने हेतु किया जाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र और बैंकों में हिंदी

पिछले कुछ दशकों में बैंकिंग, बीमा, रेलवे, तेल कंपनियाँ, सार्वजनिक उपक्रम, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियाँ, आदि में हिंदी का प्रयोग काफी बढ़ा है। लेखा प्रणाली, फॉर्म्स, ग्राहक सेवा केंद्र, प्रशिक्षण मॉड्यूल, और सार्वजनिक संचार अब अधिकतर द्विभाषिक रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

जनसंपर्क और हिंदी- सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं — जैसे स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, जनधन योजना, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, आदि — का प्रचार-प्रसार हिंदी में किए जाने से हिंदी के उपयोग और स्वीकार्यता को बल मिला है।

टेलीविजन विज्ञापन, सोशल मीडिया, समाचार पत्र, और सार्वजनिक घोषणाओं में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग देखा जा रहा है।

<u>चुनौतियाँ:</u>

- गैर-हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी के प्रति संकोच या विरोध
- अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रभाव
- कुछ तकनीकी क्षेत्रों में शब्दावली की कठिनता
- हिंदी में प्रशासनिक लेखन का अभ्यास कम

<u>संभावनाएँ:</u>

- नई पीढ़ी में हिंदी के प्रति उत्साह
- डिजिटल टेक्नोलॉजी में हिंदी की सशक्त उपस्थिति
- AI और मशीन ट्रांसलेशन से हिंदी कार्य और सरल होगा
- सरकारी इच्छाशक्ति और नीतिगत समर्थन से हिंदी का प्रयोग और व्यापक हो सकता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि राजभाषा हिंदी का सरकारी कामकाज में विकास केवल भाषा का विकास नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता, संविधान की भावना और भारतीयता की अभिव्यक्ति है। हिंदी अब केवल फाइलों की भाषा नहीं, बल्कि तकनीक, विज्ञान, प्रशासन, और जनसंपर्क का सशक्त माध्यम बन चुकी है। इस दिशा में हुए प्रयास सराहनीय हैं, किंतु जब तक इसे आत्मसात नहीं किया जाएगा, तब तक इसका पूर्ण विकास अधूरा रहेगा। हमें यह समझना होगा कि राजभाषा हिंदी केवल सरकार की भाषा नहीं, बल्कि जन की भाषा है और जब जनता अपनी भाषा में सरकार से संवाद करेगी, तभी सच्चा लोकतंत्र साकार होगा।

****

सोनम सक्सेना
हिंदी सहायक
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

कविता मेरी पहचान है

कविता मेरी सांसों में है,
जैसे जीवन में मधुर तान है,
हर शब्द मेरा श्रृंगार बने,
हर पंक्ति मेरा अभिमान है।

काग़ज़ नहीं, ये दिल है मेरा,
स्याही नहीं, ये अरमान हैं,
भावनाओं की बूँद-बूँद से
सजते मेरे स्वप्न-स्थान हैं।

जब भी चुप होती है दुनिया,
मेरी कविता बोल उठती है,
दर्द हो या हो कोई उत्सव,
हर पल ये साथ निभाती है।

कुछ आंसू, कुछ मुस्कानें,
कुछ टूटी-बिखरी कहानियाँ,
मैं बुनती हूँ हर एहसास को
अपनी भावनाओं की रानियाँ।

ना मंच की भूख, ना तालियों का शोर,
बस दिल को छू ले, वही है ज़ोर,
हर नारी की मौन पुकार में
मैं ढूंढती अपनी काव्य-डोर।

मैं सोनम हूँ — एक सरल रचना,
मेरे शब्दों में बसती भावना,
मेरी कविता मेरी आत्मा है,
मेरा वजूद, मेरी पहचान है।

****

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा, सदैव इरेडा
(नवरत्न सीपीएसई)

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

पंजीकृत कार्यालय / Registered Office
प्रथम तल, कोर–4–ए, ईस्ट कोर्ट, भारत पर्यावास केन्द्र, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003
दूरभाष / Phone : +91-11-24682206-19 फैक्स / Fax : +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय / Corporate Office
तीसरी मंजिल, अगस्त क्रान्ति भवन, भीकाएजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066
दूरभाष / Phone : +91-11-2671400-12 फैक्स / Fax : +91-11-26717416

इरेडा व्यवसाय केन्द्र / IREDA Business Center
एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, ब्लॉक नंबर 2, प्लेट बी, 7वीं मंजिल, पूर्वी किदवाई नगर, नई दिल्ली–110023
दूरभाष / Phone : +91-11-24604157, 24347700-24347799
ई–मेल :cmd@ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in

@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial